खण्ड: XIV अंक: 9 व 10

सितम्बर–अक्टूबर, 2002

चैतन्य लहरी

... आपकी माँ का नाम बड़ा शक्तिशाली है। आपको पता होना चाहिए यह अन्य सब नामों से शक्तिशाली है। सबसे शक्तिशाली मंत्र है। किन्तु आपको जानना चाहिए इसे कैसे उच्चारण करना चाहिए।

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

1 जन्म दिवस पूजा - निर्मल धाम, दिल्ली, 21.03.2002

3 अभिनन्दन समारोह - निर्मल धाम, दिल्ली, 23.03.2002

11 जन कार्यक्रम - रामलीला मैदान, दिल्ली, 24.03.2002

23 होली पूजा - पालम विहार, गुड़गाँव, 28.03.2002

25 गुड़ी पड़वा पूजा - पालम विहार, गुड़गाँव, 13.04.2002

29 सहस्रार पूजा - कबैला, 06.05.2002

39 श्री हनुमान पूजा - मई, 1989

चैतन्य लहरी

प्रकाशक
वी.जे. नलगीरकर
162 – ए, मुनीरका विहार, नई दिल्ली – 110067

मुद्रक
प्रिंटो–ओ–ग्राफिक्स
नई दिल्ली

सदस्यता के लिए कृपया इस पते पर लिखें :-
श्री ओ.पी. चान्दना
एन – 463 (G-11) ऋषि नगर, रानी बाग,
दिल्ली – 110034
फोन : (011) 7013464

सहज सम्बंधी अपने अनुभव, चमत्कारिक फोटोग्राफ तथा कलाकृतियाँ निम्न पते पर भेजें :
चैतन्य लहरी
सहजयोग मंदिर
सी – 17, कुतुब इन्स्टीच्यूशनल एरिया
नई दिल्ली – 110016

जन्म दिवस पूजा

निर्मल धाम, दिल्ली, 21.03.2002

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

मैं देख रही हूँ कि ये सारे प्यार की महिमा कैसे फैल गई, कहाँ से कहाँ पहुँच गई, कितने लोगों तक, इसकी खबर ही नही है! किन्तु इसका पूरा शास्त्र समझ में आ गया। प्यार का भी कोई शास्त्र हो सकता है? प्यार का कोई शास्त्र नहीं। प्यार जो है एक महामण्डल की तरह सब दूर छाया हुआ है। इसका एहसास हमें नहीं, उसे हम जानते नहीं। लेकिन परमात्मा का प्यार, ये तो सारे दूर, सारी सृष्टि में, सारे संसार में, हरेक देश में फैला हुआ है। आपके आत्मसाक्षात्कार होने के बाद ही आप इसको महसूस कर सकते हैं। इसको जान सकते हैं कि ये प्यार, परमात्मा का प्यार, परमात्मा की शक्ति सिर्फ प्यार है और प्यार ही की शक्ति है जो कार्यान्वित होती है। हम लोग इसे समझ नहीं पाते। किसी से नफरत करना, किसी के प्रति दुष्ट भाव रखना, किसी से झगड़ा करना, ये तो बहुत ही गिरी हुई बात है। आप तो सहजयोगी हैं, आपके मन में सिर्फ प्यार के और कुछ भी नहीं होना चाहिए।

अपने देश में आजकल जो आफत मची है, इसको देखते हुए समझ में नहीं आता है कि धर्म के नाम पर इतना प्रकाण्ड रौरव इंसान ने क्यों खड़ा कर दिया? इसकी क्या जरूरत थी? एक चीज़ शुरु होती है फिर इसकी प्रतिक्रिया आती है और प्रतिक्रिया शुरुआत की एक क्रिया से भी बढ़कर होती है। इस तरह से परमात्मा का जो भी आपको अनुभव है वो कम होता जाता है। अब समझने की कोशिश करना चाहिए कि हम प्यार को कैसे बढ़ावा दे सकते हैं, प्यार को हम कैसे दिखा सकते हैं और उसको हम कैसे पनपा सकते हैं?

सबसे पहले तो हमें अपने बच्चों की ओर ध्यान देना चाहिए। हम अपने बच्चों को क्या सिखा रहे हैं? उसको किसी ने ग़र एक थप्पड़ मारी तो क्या हम कहते हैं जाकर उसे मारो, उल्टे अगर आप उसे समझाएं कि कोई बात नहीं, नासमझ है, उसने तुम्हें मारा तो ठीक हो जाएगा। वो फिर से दोस्ती कर लेगा। क्योंकि बच्चे का हृदय जो है बहुत सरल, अबोध होता है। एक पल में वो ठीक हो जाएगा। फिर उसको ग़र समझाया जाए कि बेटे देखो तुमको वो मारता है, ये बुरी बात है, फिर तुम भी बुरी बात मत करो। बच्चा समझ जाएगा कि मार पीट अच्छी चीज़ नहीं है। ये बचपन से ही चीज़ बननी है। बचपन से ही बच्चों को समझाया जाए कि तुम मुसलमान हो या तुम हिन्दू हो या तुम फलाना हो, या तुम ढ़िकाना हो, इससे बच्चे को यही समझ में नहीं आता है कि देखने में तो मैं इन्हीं के जैसा हूँ। मेरा नाक, नक्श, मुँह तो सब तो वही है, फिर इस तरह से क्यों समझा रहे हैं, इस तरह से मुझे ये क्यों लोग करते हैं? तो ये घृणा, और ये जो सारी बातें हैं, लालच, ये सब हमारे अन्दर की दुष्ट प्रवृत्तियाँ हैं और ये प्रवृत्तियाँ हमको जो आती हैं वो सहजयोग से नष्ट हो जानी चाहिएं, पूर्णतया जानी चाहिए। तभी आपको समझ में आएगा कि परमात्मा क्या हैं, और हम क्या हैं?

अभिनन्दन समारोह

निर्मल धाम, दिल्ली, 23.03.2002

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

जन्म दिवस का उत्सव मेरे लिए अत्यन्त उलझन से भरा होता है क्योंकि अत्यन्त सामान्य व्यक्ति के रूप में मेरा जन्म हुआ और सदैव मैं सर्वसाधारण ही बनी रही। पैसे की मुझे कोई समझ नहीं, घृणा को मैं नहीं समझती, लालच मेरी समझ से परे है। इन सब चीज़ों के विषय में मैं अत्यन्त सीधी हूँ। इस सब के बावजूद भी आप सब लोग आए और आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया। ये आपकी अपनी उपलब्धि है, अपनी शुद्ध इच्छा के कारण ही आपने ये उपलब्धि पाई। आजकल जन्म लेने वाले बच्चों में मैं देखती हूँ कि बहुत सी आत्मसाक्षात्कारी आत्माएं हैं। अतः मैं सोचती हूँ कि यह सब घटित होने का यही समय है, मेरे जीवनकाल में ही यह घटित होना था। मैं सोचती हूँ कि सबका अपना भाग्य है, पहले श्री राम आए फिर श्री कृष्ण आए फिर ईसा–मसीह अवतरित हुए और बाद में अन्य लोग। वो उनका समय था। मेरा समय आत्मसाक्षात्कार देने का है। परन्तु मैं कहूँगी कि आप सब लोगों ने अत्यन्त हृदय से और प्रेम से आत्मसाक्षात्कार लिया है तथा अपनी शक्तियों का उपयोग आप अन्य लोगों को परिवर्तित करने के लिए और उन्हें अपना प्रेम देने के लिए कर रहे हैं।

आप इस बात की चिन्ता नहीं करते कि अन्य लोग आपसे प्रेम करते हैं या नहीं। उस चीज़ को आप देखते ही नहीं हैं। आप केवल उस प्रेम से बहने वाले आनन्द को देखते हैं। प्रेम का यह अथाह सागर है। यह आप सबके पास है। एक बार जब आप सहजयोग में प्रवेश करते हैं तो आप जान जाते हैं कि आप सहस्रार में प्रवेश कर गए हैं और सहस्रार ही सारे सत्य का स्रोत है।

आप यदि किसी से प्रेम करते हैं तो उस व्यक्ति के विषय में सत्य का आपको ज्ञान होता है। आप पता लगा लेते हैं कि वह व्यक्ति अच्छा है या बुरा। ये कठिन कार्य है परन्तु यदि आप उससे प्रेम करते हैं तो तुरन्त जान जाते हैं कि उस व्यक्ति में कमी क्या है और खूबी क्या है? परन्तु अपने प्रेम के कारण आप अपने और उस व्यक्ति के या अपने और अन्य लोगों के बीच सारे वातावरण को अपने प्रेम से आच्छादित कर लेते हैं। आसानी से आप कमियों को नहीं देखते। आपके लिए ऐसा करना बहुत कठिन है।

लोग कहते हैं कि मुझे बहुत बार लोगों ने धोखा दिया। परन्तु मुझे इस चीज़ का विवेक ही नहीं है कि धोखा देने का अर्थ

क्या है और किस प्रकार लोग धोखा देते हैं। कई बार मुझे बताया जाता है कि लोग मेरी बुराई कर रहे हैं, हाँ वो ऐसा कर रहे हैं। मैं देख सकती हूँ कि वे मेरे विषय में उल्टी–सीधी बातें कर रहे हैं, कोई बात नहीं। इससे मुझे कोई अन्तर नहीं पड़ता। वो यदि मेरी बुराई करते हैं तो भी कोई बात नहीं। परन्तु ये अभिनन्दन समारोह मेरे लिए निश्चित रूप से बहुत उलझन पूर्ण है क्योंकि, जैसे वो सोचते हैं, मैंने ऐसा कोई विशेष कार्य नहीं किया है। विशेष चीज़ तो वो होती है कि जो भी क्षमता आपमें है वो यदि गतिशील हो उठे तब बात होती है–जैसे प्रेम। मेरे अन्दर अथाह प्रेम है, मैं नहीं जानती इसके विषय में क्या कहूँ! ये कार्य करता है, गतिशील हो उठता है और सभी लोग प्रेम को मानते हैं।

आप चाहे जितने महान हों, जितने बुद्धिमान हों, जितना चाहे धन कमाते हों, चाहे जो भी हों, ये सब चीज़ें इतनी महत्वपूर्ण नहीं हैं। महत्वपूर्ण बात तो आपको प्रेम किया जाना है। मैंने इसका कोई सिद्धांत नहीं बनाया है और न ही मैं ये कहूँगी कि आपको ये सीखना चाहिए। परन्तु यह अत्यन्त मूल बात है और यही सहायक होती है।

अतः सहस्रार में रहते हुए यदि आप प्रेम लहरियों को बहते हुए देखते हैं, हो सकता है कुछ लोग इस का अनुचित लाभ उठाएं, परन्तु कोई बात नहीं इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। कुछ लोग आपको भ्रमित भी कर सकते हैं। तो भी ठीक है लोग सभी कुछ करते हैं। परंतु जब आपको प्रेम प्राप्त होता है तब आप सन्तुष्ट हो जाते हैं। इन चीज़ों की आप चिन्ता नहीं करते।

अतः आप सन्तुष्ट होते हैं। इस बात की चिन्ता नहीं करते कि अन्य लोग आपके साथ क्या कर रहे हैं, आपका क्या लाभ उठा रहे हैं, आपको कितना कष्ट दे रहे हैं या कितनी सुविधाएं दे रहे हैं। अपने आपसे जो भी सुविधाएं आपको मिलती हैं वे स्वतः हैं।

यह अभिनन्दन समारोह आदि आपके हृदय को प्रतिबिम्बित करता है, इसमें कोई सन्देह नहीं। मैं नहीं सोचती कि मेरे लिए ये कोई बहुत बड़ी उपलब्धि है, नहीं है। क्योंकि मैं आपको बताना चाहूँगी कि ये सब चीज़ें कभी भी मेरा स्वप्न न थीं। मैंने सुना है कि श्रीमाताजी का ये स्वप्न है, नहीं, नहीं, नहीं, नहीं। मेरा कोई स्वप्न नहीं है। ये बात मैं आपको स्पष्ट बता देना चाहती हूँ। मेरी तो साधारण सी इच्छा है कि सभी लोग प्रेम करें और ये पावन प्रेम आपके जीवन को परिवर्तित कर देगा, पूरे विश्व को परिवर्तित कर देगा। इसके विषय में कोई सन्देह नहीं है। आप सब लोगों में अत्यन्त स्वाभाविक रूप से ये घटित हो जाना चाहिए क्योंकि आपका सहस्रार खुल चुका है। अतः सभी सहजयोगियों के लिए यह घटना अत्यन्त–अत्यन्त स्वाभाविक होनी चाहिए। उदाहरण के रूप में, मैं जानती हूँ कि कभी–कभी लोग बहुत अभद्र होते हैं,

उनके कुछ नियमाचरण हैं और उसके बाद वे अन्य लोगों पर बहुत ही क्रोधित हो जाते हैं। कुछ लोगों के पास पदवियाँ हैं और उन पदवियों का उपयोग वे अन्य लोगों पर क्रोध करने के लिए, उनके पीछे पड़ने के लिए और उन्हें सताने के लिए करते हैं, और चीज़ें इसी प्रकार चलती रहती हैं। परन्तु उन्होंने वास्तविकता को नहीं समझा, उन्होंने वास्तविकता को भुला दिया है। आप केवल प्रेम करें, शुद्ध प्रेम, और फिर वास्तविकता को देखें। तब आप समझते हैं कि हाँ वह यही कर रहा है, इस कारण से वह कर रहा है, इस बात को आप जान जाते हैं। परन्तु इसके विषय में चिन्तित नहीं होते कि "क्यों वह मेरी तरह से कर रहा है, क्यों वह तुम्हें कष्ट दे रहा है और शनैः शनैः सभी कुछ शान्त हो जाता है। सभी कुछ अपने आपमें ही समाप्त हो जाता है।

मैंने देखा है कि बहुत से लोग मेरी बुराई करते हैं, मेरे विरोध में सभी प्रकार के कार्य करते हैं। तो क्या हुआ? उन्हें जो चाहे करने दो। ये उनका कार्य है, उन्हें करने दो। परन्तु आप जानते हैं कि इससे मुझे कोई परेशानी नहीं होती। मैं सोचती हूँ कि वो अपनी ही शैली का कोई कार्य कर रहे हैं। परन्तु इससे क्या प्राप्त होता है? आनन्द तो केवल शुद्ध प्रेम से ही प्राप्त होता है। आपमें यदि शुद्ध प्रेम नहीं है तो आप आनन्द नहीं प्राप्त कर सकते। आनन्द की केवल बातें करना–मैं जानती हूँ कि वास्तव में कौन आनंदित हैं और कौन नहीं। बनावटी रूप से आप ये नहीं कह सकते कि "मैं आनन्दित हूँ।" यह तो एक प्रकार की अन्तर्जात, सहज–स्वाभाविक भावना होनी चाहिए।

अतः आप भावनाओं का सागर हैं, सुन्दर–सुन्दर भावनाओं का सागर हैं। ये सागर जब आपको समृद्ध करता है तब आपको किसी चीज़ की चिन्ता नहीं रह जाती।

आप भली–भांति जानते हैं कि पैसे के मामले में मैं बहुत अकुशल हूँ। मैं समझ ही नहीं पाती। मैं पैसा गिन भी नहीं पाती। तो क्या? मेरा कहने से अभिप्राय है कि यह मेरी कमी है परन्तु कोई बात नहीं। आवश्यकता इस बात की है कि "क्या आप दूसरों का प्रेम महसूस कर सकते हैं? क्या आप दूसरों का माधुर्य महसूस कर सकते हैं?" किसी छोटे बच्चे को देखकर आपको कितना अच्छा लगता है! इसी प्रकार क्या आपके मन में अन्य लोगों के लिए भी ऐसी ही भावनाएं आती हैं 'या क्या आपको लगता है कि वो लोग भी बच्चों की तरह से हैं? क्या वो भी बच्चों की तरह से अबोध हैं?' यहाँ पर मैं सुझाव दूंगी कि अबोधिता ही प्रेम का लक्षण है।

कोई भी अबोध व्यक्ति प्रेम की तकनीक को जान जाएगा। आप यदि बहुत चतुर हैं बहुत बुद्धिमान हैं तो आप मुड़कर उत्तर दे सकते हैं। लोगों को उनकी त्रुटियाँ बता सकते हैं। ये सब कार्य आप कर सकते

हैं। परन्तु ये कोई तरीका नहीं है। आपमें यदि प्रेम है तो बिना कुछ कहे आप लोगों को सुधार सकते हैं क्योंकि प्रेम महानतम विवेक है। ये आपको सभी उचित विधियाँ प्रदान करता है। सभी कुछ कार्यान्वित करता है और तब लोग कहते हैं, "श्रीमाताजी ये तो चमत्कार है, ये सब कैसे घटित हुआ!" नहीं, नहीं ये चमत्कार नहीं है। ये तो सर्वसाधारण चीज़ है जो प्रेम ने अपने ही ढंग से कार्यान्वित की है। प्रेम निर्जीव नहीं है। यह निर्जीव सागर नहीं है। यह केवल सोचता ही नहीं है कार्य भी करता है और अत्यन्त सुन्दर रूप से कार्य करता है। कभी–कभी तो मुझे इसकी कार्य शैली पर आश्चर्य होता है। हम इसे चमत्कार कहते हैं आदि–आदि। परन्तु ये चमत्कार नहीं है ये तो प्रेम है।

क्योंकि परमात्मा आपको प्रेम करते हैं इसलिए वो आपको चमत्कार देते हैं – तथाकथित चमत्कार। वे कुछ भी कर सकते हैं क्योंकि परमात्मा चाहते हैं कि आप सहजयोग अपनाएं और सच्चे सहजयोगी बनें।

अतः प्रेम के सभी कार्यों को आप चमत्कार मान लेते हैं, ऐसा नहीं है। लोग क्यों कहते हैं "श्रीमाताजी ये आपकी शैली है।" प्रश्न ये नहीं है। प्रश्न तो प्रेम का है। मान लो मैं सभी को बहुत प्रेम करती हूँ, सभी पर बहुत विश्वास करती हूँ। आरम्भ में मैं किसी पर अविश्वास नहीं करती। परन्तु ये लोग हैं कि डूब रहे हैं, डूब रहे हैं। परन्तु अब भी मुझे विश्वास है कि वो ठीक हो जाएंगे। उन्हें एक अवसर दिया जाना चाहिए। परन्तु मान लो यदि वे चालाकी करने का प्रयत्न करते हैं तो जिस प्रकार से उनका पर्दाफ़ाश होता है उससे आपको हैरानी होगी। जिस प्रकार उनकी पोल खुलती है वह अत्यन्त हैरानी की बात है। दुबई में हमारे एक सहजयोगी हैं उन्होंने मुझे बताया इन बड़े–बड़े लोगों को आत्मसाक्षात्कार देने का कोई लाभ नहीं। मैंने कहा, "क्यों?" तो उन्होंने मुझे समाज के उच्च, आध्यात्मिक एवं स्वीकृत लोगों के नाम बताए। कहने लगा, "मैंने उन्हें आत्मसाक्षात्कार दिया था तो उनकी पोल खुल गई। मैं नहीं जानता, मैंने ऐसा कुछ नहीं कहा, फिर भी उनकी पोल खुल गई! एक अन्य व्यक्ति जिसको उसने आत्मसाक्षात्कार दिया उसका भी बहुत बड़ा नाम था, वह बहुत सारे इनाम प्राप्त कर चुका था। उसकी भी पोल खुल गई! एक अन्य व्यक्ति, जिसे उसने आत्मसाक्षात्कार दिया, वह शान्ति पुरस्कार से अलंकृत था; उसकी पोल खुल गई और उसके विषय में समाचारों में बहुत कुछ छपा।

अब होता क्या है कि ये, व्यक्ति तो अपने प्रेम के कारण उन्हें आत्मसाक्षात्कार देता है परन्तु प्रेम इस प्रकार से कार्य करता है कि वे अनावृत हो जाते हैं! आप किसी की भी पोल नहीं खोलना चाहते, आप तो केवल इतना चाहते हैं कि किसी तरह से लोग सहजयोग में आ जाएं। कार्य

करते रहना ठीक है। कहने लगा, "श्रीमाताजी मैं नहीं सोचता कि अब मैं किसी को आत्मसाक्षात्कार दूँगा। मैंने कहा, "आप आत्मसाक्षात्कार देते चले जाओ, परमात्मा अगर यही चाहते हैं कि उस व्यक्ति की पोल खुल जाए तो उस व्यक्ति की पोल खुल ही जाएगी। व्यक्ति में यदि कोई बुराई है तो उसका पर्दाफ़ाश हो ही जाएगा।

मान लो आत्मसाक्षात्कार लेने के पश्चात् किसी व्यक्ति की दुर्घटना हो जाती है, उसकी रक्षा की जाएगी, परन्तु दुर्घटना हो सकती है। इसका क्या कारण है? क्यों, क्यों उसके साथ वो दुर्घटना घटी? क्योंकि वो सहजयोग के लिए कुछ नहीं करता, वो बहुत ही महत्वाकांक्षी है। कोई व्यक्ति जो बीमार है, सहजयोग से वह ठीक जो जाता है और जो इतना बीमार नहीं है उसकी स्थिति खराब हो जाती है! ये वास्तविकता है। उसकी रक्षा की जा रही है – ये सहजयोग की एक बात है, **आप चाहे सबसे खराब सहजयोगी हों, आपकी रक्षा की जाती है, इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु यदि आप वैसे ही बने रहते हैं, हर समय यदि आप सहज के विरुद्ध जाने का प्रयत्न करते हैं और असहज हो जाते हैं तब आप बहुत बुरी तरह से कष्ट उठाते हैं।**

ये अत्यन्त साधारण बात है कि आप यदि एक स्थान पर खड़े हैं, एक स्थान पर जमे हुए हैं, जो कि अत्यन्त शान्त है, आनन्ददायी है, फिर भी आप वहाँ से निकलना चाह रहे हैं! अतः बाहर की सभी स्थितियों का सामना आपको करना पड़ेगा। ये स्वतः होता है। आप यदि ऐसी स्थिति में बने रहेंगे जो शान्त है, आनन्ददायी है, प्रेममय है, तो आप ठीक रहेंगे, आध्यात्मिकता में आगे बढ़ेंगे। परन्तु यदि आप इस स्थान को छोड़ना चाहेंगे तो आप छोड़ सकते हैं इसमें कोई कुछ नहीं कर सकता। यह स्थान तो दुर्ग की तरह से था या एकान्त स्थान की तरह जो कि बहुत ही सुखकर था, जहाँ आपका चित्त स्थिर रहता। परन्तु आप चित्त से बाहर जाना चाहते हैं। आप चित्त से बाहर चले गए हैं। यही कारण है कि बहुत से सहजयोगी ये बात नहीं समझ पाते कि क्यों लोग सहजयोग में स्थापित नहीं हो पाते।

अतः अपनी बुद्धि का उपयोग करने का कोई लाभ नहीं क्योंकि ये बुद्धि, ये मानवीय बुद्धि बहुत उच्च स्तरीय नहीं है। सर्वोत्तम बात तो ये है कि आप अपनी आत्मा के प्रेम में बँध जाएं – प्रेम जो कि दिव्य है, पोषक है और आपकी देखभाल करता है। परन्तु हमें इस बात का ज्ञान नहीं है कि अपनी देखभाल किस प्रकार करें। हम ये भी नहीं जानते कि स्वयं को प्रेम किस प्रकार करना है। हम इस व्यक्ति से प्रेम करते हैं, उस व्यक्ति से प्रेम करते हैं, परन्तु स्वयं से प्रेम करने के विषय में क्या है? लोग सोचते हैं स्वयं से प्रेम करना स्वार्थ है, नहीं ऐसा नहीं है। आत्मा को जानना प्रेम है। आपको यदि आत्मा का ज्ञान है तो आपको प्रेम का ज्ञान है, आप प्रेम के सागर में कूद पड़ेंगे!

ये मेरा अनुभव है जो मैं आपको बता रही हूँ। **स्वयं पर बस दृष्टि रखें। अन्तर्वलोकन बहुत सुगम है - "क्या मेरे अन्दर प्रेम है, क्या मैं प्रेम से परिपूर्ण हूँ?"** थोड़ा सा प्रेम है थोड़ा सा नहीं है। प्रेम बहुत अधिक बन्धनयुक्त भी हो सकता है। जैसे हम अपने देश को प्रेम करते हैं, भारत को। अपने देश से यदि हम प्रेम करते हैं तो हम सोच सकते है कि भारत की सभी चीज़ें अच्छी हैं। देश की कमियों के विषय में कभी बात नहीं करेंगे। कोई यदि भारत विरोधी बात करेंगे तो हम उनसे घृणा करेंगे। सभी के साथ ऐसा है। आप अपने देश से प्रेम करते हैं, अपने माता–पिता से प्रेम करते हैं, किसी से भी प्रेम करते हैं परन्तु ये सीमित प्रेम है, बन्धन–युक्त प्रेम है। प्रेम तो खुला होना चाहिए, तभी आप देख पाएंगे कि अपने देश के मामले में, अपने सम्बन्धों के मामले में आपकी स्थिति क्या है। आपको हर चीज़ का ज्ञान हो जाएगा। आपको किसी को हानि पहुँचाने की आवश्यकता नहीं है, किसी को कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है, किसी से लड़ने–झगड़ने की आवश्यकता नहीं। इसके बिना ही आप सब जान जाऐंगे क्योंकि प्रेम ज्ञान प्रदान करता है–किसी व्यक्ति के विषय में पूर्ण ज्ञान। आप व्यक्ति के विषय में जान जाते हैं कि उसके इरादे क्या हैं और वह कर क्या रहा है। परन्तु आप बुरा नहीं मानते क्योंकि उससे आप प्रेम करते हैं इसलिए आप बुरा नहीं मानते। ठीक है, जो चाहे करो। ये छोटे बच्चे की तरह है। ये गलत रास्ते पर जा रहा है, कोई बात नहीं जाने दो।

इन सारी चीज़ों के बावजूद चाहे जैसी वेश–भूषा आप पहनें आप अत्यन्त भाग्यशाली हैं कि आप सहस्रार पर पहुँच गए तथा सहजयोग का आपको पूरा ज्ञान है। परन्तु सहजयोग का अभ्यास किए बिना आप इसे कार्यान्वित नहीं कर सकते क्योंकि अभ्यास से ही आपको अपनी आत्मा का ज्ञान होता है। आप जब ध्यान धारणा करते हैं तो अपनी आत्मा को पहचानते हैं। तब आप प्रेम से सराबोर हो जाते हैं। परन्तु अब यहाँ बैठे हुए आप सोचने लगते हैं वह व्यक्ति बहुत खराब है, मैं उससे घृणा करता हूँ–ये, वो। इसी प्रकार से सारे मूर्खता पूर्ण विचार आपके मस्तिष्क में आते हैं। या आप सोचते हैं 'मैं ये गहना खरीद लूँ' या मुझे फलाँ कार अवश्य खरीदनी है, आदि–आदि। ऐसा जब होता है तो आप प्रेम नहीं करते। **आप जब वास्तव में प्रेम करते हैं तब जिस भी चीज़ की आपको आवश्यकता होती है आपको मिल जाती है, जिस भी चीज़ की आप इच्छा करते हैं वह आपको मिल जाती है।** सर्वप्रथम स्वयं से आपको प्रेम करना है। परन्तु ये प्रेम शुद्ध प्रेम होना चाहिए। इसके परिणाम–स्वरूप आप अपने आपको स्वच्छ कर लेंगे। कभी–कभी आप अपने स्वभाव से, प्रकृति से, अपने व्यक्तित्व से, अत्यन्त एकरूप हो जाते हैं परन्तु उस प्रेम में डूबकर आप

महसूस करते हैं कि ये प्रेम नहीं है। यह प्रेमान्धता है।

प्रेम आपको अपने विषय में पूरी समझ देता है। 'मैं क्या हूँ?' मेरी समस्याएं क्या हैं। क्यों मैं समस्याएं पैदा करता हूँ? क्यों मैं समस्याओं में फँसता हूँ?'' आप आश्चर्यचकित होंगे कि प्रेम में इतना शक्तिशाली प्रकाश है कि यह सत्य है और ज्ञान है।

यद्यपि मैं ये नहीं जानती कि इस विश्व में क्या मैं उन लोगों को दोष दूँ जो आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं या उनको जो पूर्ण आत्मसाक्षात्कारी हैं, मैं ऐसा कुछ नहीं करुंगी क्योंकि उन लोगों के जीवन में तो प्रकाश है ही नहीं। वो न तो स्वयं को देख सकते हैं और न अन्य लोगों को। तो उन्हें दोष देने का क्या लाभ है? इस जाति को, उस जाति को, इस देश को, उस देश को दोष देने का क्या लाभ है? ये प्रेम तो शाश्वत है। इसने किसी विशेष प्रकार, विशेष शैली से कुछ नहीं लेना देना। यह सर्वव्यापक है, सर्वत्र यह फैल रहा है। मैं चाहती हूँ कि आप इसका आनन्द लें।

आपके सम्मुख मैं एक उदाहरण दूंगी। एक दादी और पोते का। उनका सम्बन्ध–कम से कम भारत में मैं जानती हूँ – गहन प्रेम का होता है। बच्चे के लिए दादी और दादी के लिए बच्चा सर्वस्व होता है। वे परस्पर प्रेम करते हैं। चाहे जो पोता करे या चाहे जो दादी करे। सभी कुछ उचित है। प्रेम आनन्द का यह गहन अनुभव है। आप महसूस करते हैं कि आप प्रेम की बुलन्दियों पर हैं और उस प्रेम का आनन्द लेते हैं। प्रेम में यदि पावनता नहीं है तो आप उसे प्रेम का आनन्द नहीं ले सकते।

अतः मैं आपसे प्रार्थना करुंगी कि **आपके सिर में सहस्रार में स्थित इस सागर को खोज़ें जिसे आप का हृदय परिपूर्ण कर रहा है।** क्या आपको इस बात का ज्ञान है कि हृदय और सहस्रार का परस्पर गहन सम्बन्ध है? शैली इस प्रकार से है कि किसी व्यक्ति का मस्तिष्क यदि ठीक नहीं है तो हृदय भी ठीक नहीं होगा और यदि हृदय ठीक नहीं है तो मस्तिष्क भी ठीक नहीं होगा। परन्तु मस्तिष्क का प्रभाव हृदय पर बहुत अधिक है।

लोग कहते हैं कि वंशाणु (Genes) खराब हैं आदि–आदि। ऐसा कुछ भी नहीं है सहजयोग में आने के पश्चात् आपके जीन्स बदल जाते हैं, आप बदल जाते हैं, आपका सभी कुछ बदल जाता है। अतः आप का मस्तिष्क प्रकाश से परिपूर्ण है, इसके सिवा इसमें कुछ भी नहीं। आपका हृदय प्रकाश से परिपूर्ण है और हर समय आप विनोद एवं प्रेम से ओत–प्रोत हैं। निःसन्देह स्थिति हर रोज़ भिन्न होती है परन्तु आपने यह स्थिति प्राप्त कर ली है अतः इसका आनन्द लें।

तब जाति प्रणालियाँ, रुढ़िवाद, लोग, ईर्ष्या और स्पर्धा सभी प्रकार की चीज़ें छूट जाती हैं। परन्तु आपके मस्तिष्क में यदि बेवकूफियों का जंगल है तो सभी प्रकार के

जानवर इसमें घुस आएंगे। स्वयं को प्रेम से स्वच्छ करें, प्रेम से पावन करें, हर स्थिति को, हर चीज़ को प्रेम से देखें और आप आश्चर्यचकित होंगे कि अब रौब न जमाना, नियंत्रण न करना, घृणा न करना, बुरी बात न बोलना, आपके लिए कितना सुगम हो जाएगा! यह अत्यन्त सुधारक चीज़ है। प्रेम अत्यन्त सुधारक है अत्यन्त आनन्ददायी है। आपको स्वयं पर हैरानी होगी कि किस प्रकार आप कार्यों का प्रबन्धन कर रहे हैं! मैं ऐसे बहुत से लोगों को जानती हूँ। एक सहजयोगी था जो अपने चाचा से बिल्कुल बात नहीं किया करता था, कहता था कि 'मैं उससे घृणा करता हूँ।' 'परन्तु क्यों' 'मैं नहीं जानता क्यों परन्तु मैं उससे घृणा करता हूँ।' एक बार वह रेसकोर्स में गया और अपने चाचा को आते देखा। दौड़कर उसने उसे गले लगा लिया। चाचा देखने लगे कि अब ये क्या चाहता है? ये ऐसा क्यों कर रहा है? ये सब क्या है? उसके मन में केवल एक ही प्रश्न था कि यह मुझसे प्रेम क्यों करना चाहता है? इस बात को वह न समझ सका। परन्तु वह सहजयोगी उसे समझा न सका कि वह सहजयोगी बन गया है। चाचा ने पूछा, 'अब तुम्हें क्या चाहिए? कहने लगा, 'कुछ भी नहीं' मैं तो बस तुम्हें प्रेम करता हूँ।

ऐसा कहना कितना अच्छा है? इसके पीछे न कोई लोभ होना चाहिए, न ही योजना। यह तो सागर की उस लहर की तरह से है जो हर तट को छूती है और प्रेम का हर्षनाद करती है। तब लहरें वापिस चली जाती हैं। निरन्तर ये लहरें बहती रहती हैं और निरन्तर, अथक कार्यरत रहती हैं।

मैं जानती हूँ कि कलियुग में अवतरित होकर इस कार्य को करना अत्यन्त कठिन था। परन्तु मेरे लिए ऐसा नहीं है। जो भी कुछ हुआ, जितना भी लोगों ने मुझे कष्ट दिया, परन्तु मैं इस प्रेम के बहाव में ये कार्य करती रही। जहाँ भी सम्भव हो पाया, जब भी सम्भव हो पाया, मैं गई। मेरा स्वास्थ्य चाहे जैसा भी था, कभी मैंने उसकी चिन्ता नहीं की और आप सबका मैंने अत्यन्त आनन्द लिया। मैंने आनन्द लिया। एक दो लोग यदि बहुत खराब भी निकले तो भी कोई बात नहीं। जब आप मेरे प्रेम के विषय में ये बातें करते हैं तो मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि इसके अतिरिक्त मैं क्या कहूँ। कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि मैं चाहूँगी कि आप सब लोग भी ऐसा ही करें, इसमें उतरें और ऐसा जीवन प्राप्त करें जहाँ आप अपने प्रेम में ही तैरते रहें।

परमात्मा आपको धन्य करें।

जन कार्यक्रम

रामलीला मैदान, दिल्ली, 24.03.2002

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

सत्य को खोजने वाले आप सभी साधकों को हमारा प्रणाम।

जिस चीज़ की आज हर जगह कमी है, वो है प्रेम। यही प्रेम जो है यही प्रभु की भक्ति है। बहुत लोग जिस बात को शब्द समझते हैं, लेकिन प्रेम एक शब्द नहीं है। प्यार एक शक्ति है और उसका भण्डार हमारे ही अंदर है। हम सभी उस प्यार से भरे हैं। कभी–कभी उसका अनुभव हमको आता है। हमको अनुभव आता है कभी कि जब हमारी माँ हमको दिखती है तो हमें अनुभव आता है। लेकिन वो क्षणिक है और कभी–कभी वो स्वार्थी होता है। पर जिस प्यार की मैं बात कर रही हूँ वो है आत्मा का अपना प्रादुर्भाव, आत्मा का अपना प्रकाश। वो सबके अंदर है और स्थित है। उसके अंदर रंग, जाति–पाति कोई भेद नहीं। हर इंसान में है। जानवर में भी है। आपको आश्चर्य होगा कि जानवर प्यार बहुत समझते हैं। इंसान से भी ज़्यादा जानवर समझते हैं प्यार क्या चीज़ है। तो हम लोग वाकई अगर अपनी उत्क्रान्ति में बढ़ रहे हैं, अपने Evolution में बढ़ रहे हैं तो हमारे अंदर प्यार का बड़ा जबरदस्त प्रकाश होना चाहिए। अगर प्यार आ जाए तो हमारे सारे प्रश्न जो हैं, जो मानव जाति के लिए पहाड़ जैसे खड़े हैं, एक दम खत्म हो जाऐं।

प्यार की हमने व्याख्याऐं अनेक की हैं पर उसकी कोई व्याख्या नहीं कर सकता क्योंकि वो एक सागर है। हमारे अंदर बसा हुआ एक महान सागर है और उसको भोगना भी हमारे ही नसीब में है। उसकी लहरें भी हमीं ज्ञात कर सकते हैं। हमारे ही लिए वह है। दूसरा चाहे उसे समझे या न समझे लेकिन हमारे लिए वो एक बहुत बड़ी अद्भुत शक्ति है। शक्ति कहने से लोग सोचते हैं कि कोई मानो प्रलंयकारी चीज़ है। वो शान्ति देती है, वो आनंद देती है। वो सुख देती है और दुनिया के सारे प्रश्न समाप्त कर देगी अगर संसार इस प्यार में लिपट जाए। ये प्यार जो हमारे

साथ साल दर साल अंदर ही छिपा बैठा है, अंदर ही कुम्हला रहा है, उस पर अनेक आवरण हैं। सबसे बढ़ा आवरण है कि हम अपने को बहुत बड़ी चीज़ समझते हैं। आप स्वयं प्यार हैं, इससे बढ़कर आप क्या हो सकते हैं? इससे आप कौन सी बड़ी हस्ति हो सकते हैं कि आप प्यार हैं और प्यार ही हैं और कुछ नहीं हैं! ऐसी आपमें शक्ति है जो सबको शान्त कर सके, सबको स्वच्छ कर सके, सबके अंदर आनंद भर सके। दुनिया भर के कोई से भी प्रश्न हों, कोई सा भी प्रश्न हो, उसके पीछे क्या है? द्वेष, नाराज़गी, अहंकार आदि बड़े–बड़े राक्षस बसे हैं और इसमें मनुष्य न जाने क्या मज़ा उठाता है, कौन सा उसे उत्साह प्राप्त होता है, पर वो समझ ही नहीं पाता अपने को कि मैं क्या हूँ। मेरे पास भण्डारा है जिस चीज़ का तो मैं क्यों दर–दर में, गली–गली में भीख माँगता फिरूँ? जो चीज़ मेरे अंदर में उमड़ रही है उसको छोड़कर क्यों मैं ऐसी–ऐसी चीज़ों के पीछे दौड़ता हूँ?

ग़लत दिमाग और ग़लत विचारधारा से ऐसा होता है। बहुत से लोगों को लगता है कि दुनिया में ग़र आपके पास पैसा हो तो आप बहुत बड़े आदमी हो। मैंने आज तक किसी भी पैसे वाले को सुखी नहीं देखा। मेरे पास जितने पैसे वाले आते हैं उनकी शक्ल से ही पता चल जाता है कि ये कोई बड़े भारी दुःखी आदमी हैं और ये पता चलता है कि ये कोई करोड़पति हैं। इसके अंदर आखिर इतना पैसा है, इतनी चीज़े हैं तो भी आखिर ये दुःखी क्यों है? अब पता चला कि इन पर दुनियाँ भर की आफतें आई, दुनियाँ भर की परेशानियाँ आई।

कुछ समझ में नहीं आता कि इतना पैसा होते हुए भी उन पर इतनी आफतें क्यों आई हैं। सो आजकल के ज़माने में नई–नई आफतें आई हैं। पहले नहीं होती थीं इतनी, जितनी आज हैं। ग़र आपके पास बहुत पैसा है तो न जाने कितने चोर आपके पास दौड़ेगें, न जाने कितने ठग लग जाएगें, न जाने कितने छुरा लेकर आपके पीछे दौड़ेंगे। न जाने क्या–क्या आफतें होगीं। सो पैसे से आदमी सुखी हो नहीं सकता। आप देख लीजिए क्योंकि पैसे होने पर भी मनुष्य की लालच खत्म नहीं होती। उसको लगता है कि आज ये है तो कल वो होना चाहिए। वो है, तो वो होना चाहिए। उसकी लालच खत्म ही नहीं होती उस पैसे से क्योंकि उस पैसे में समाधान देने की शक्ति नहीं। ग़र आपके पास पैसा है तो समाधान इसमें है कि वो किसी को दे दें। गरीबों को बाँट दें, उनका दुःख हल्का करें। तब आपको समाधान मिलेगा। नहीं तो पैसे का कोई अर्थ नहीं। जो पैसा आप बाँट नहीं सकते वो पैसा लक्ष्मी हो ही नहीं सकता। लक्ष्मी तत्व में मैंने आपसे बताया है एक हाथ से देना और दूसरे हाथ से आश्रय। तो दूसरों को ग़र आप आश्रय दे रहे हैं, अपने पैसे के साथ, तो आपको आनंद आएगा। ग़र आप

दुनिया की भलाई कर रहे हैं अपने पैसे से तो उस पैसे से आपको आनंद आएगा। ग़र वही पैसे आप संभाल–संभाल कर रखें, उसका पहाड़ बनाएँ और उस पर बैठ जाऐं, कोई भी आपके शक्ल में उसकी खुशी नज़र नहीं आएगी। ऐसे लोगों को बहुत लोग जानते हैं और हँसते हैं उन पर। देखते हैं कि ये आदमी इस तरह से जा रहा है। ये कर रहा है। पर अब करें क्या? जब तक उसको अपनी अक्ल नहीं आएगी वो कभी समझेगा ही नहीं। वो सम्हलेगा नहीं और उस पैसे का आनंद नहीं उठाएगा। आज पैसा आया तो कोई और नई चीज़ में चला गया। और पैसा आया तो वो और किसी आदत में चला गया। मनुष्य के पास पैसा आते ही न जाने वो बाहर की गन्दी–गन्दी बातें सीखने लग जाता है। ऐसी कोई चीज़ होगी ना पैसे में जिससे आदमी खराब ही क्यों सीखता है? शराब क्यों पीता है? औरतों के पीछे क्यों भागता है? पैसा आते ही साथ ऐसी कौन सी बात होती है कि वह बिगड़ता ही जाता है, बिगड़ता ही जाता है, बिगड़ता ही जाता है। या तो वह जेल में चला जाएगा, या सर्वनाश हो जाएगा। यही पैसा जो आपको शोभा दे सकता है वह आपके सर्वनाश का कारण बन जाता है। प्यार के संगति से आप यही सोचते रहते हैं कि किसको क्या दिया जाए। उसको किस तरह से सुशोभित किया जाए? उसको किस तरह से प्यार जताया जाए? और बड़े–बड़े सुन्दर तरीके से होता है ऐसे सुन्दर तरीके होते हैं पैसे देने के। लेने के नहीं, देने के और उसमें कभी–कभी इतना आनंद आता है कि उतना आनंद लाखों खर्चने से भी नहीं आता। ये तो बात है कि मनुष्य कभी–कभी सिर्फ अपनी शोहरत के लिए पैसे देता है। ये कोई खास बात नहीं। पर तो भी वो बेहतर है बनिस्बत इसके कि सारा पैसा अपने पास पड़ा रहे।

अब दूसरी बात है इंसान को शौक है कि वो सत्ता कमाए। सत्ता क्यों कमाए? सत्ता में क्या है? आपकी अपने ऊपर तो सत्ता है नहीं। दुनिया भर में आप सत्ता करना चाहते हैं! माने हमारी बड़ी भारी Position हो जाए। सत्ता हो जाए, सब लोग हमारे को सैल्यूट मारें। इसमें कौन सा सुख है? अंत में यही लोग जब सत्ता से उतरते हैं तो कोई उनकी ओर देखता भी नहीं। कोई उनको पूछता भी नहीं और वो बड़े दुःखी हो जाते हैं कि एक जमाने में तो मेरे सामने दौड़ते थे अब मेरे पीछे भी नहीं दौड़ते। ये ऐसी कौन सी बात है। सत्ता के पीछे में लोग जाते हैं। एक साहब से मैंने पूछा तुम पैसा क्यों खाते हो? तुमने सत्ता पाई है तो उससे कुछ अच्छा काम करो। कुछ लोगों की मदद करो। तो तुम सत्ता में आकर के ऐसे गलत काम क्यों कर रहे हो? पैसे क्यों कमा रहे हो? झूठ क्यों बोलते हो? तो उन्होंने कहा मैंने इतनी लागत लगाई, वो तो मुझे निकालनी है। तो मैंने कहा, "तुमने ये लागत लगाई क्यों?"

इसलिए क्योंकि आप जीतने वाले नहीं थे। आप अगर ऐसे ही खड़े हो जाएँ तो कोई नहीं वोट देता। तो इसलिए आपने पैसे लगाए कि इस पैसे से मैं जीत जाऊँ। तो जब तक आप लोगों को पैसा देते रहें तब–तक लोग समझेंगे कि आप किसी काम के हैं। या कोई गलत काम करने लग जाएं तो लोग खुश होंगे। ये वास्तविक बात है। मैं कोई नई बात नहीं कह रही हूँ। ये रोज़मर्रा हम देखते हैं। पर वही आदमी, जब उसकी सत्ता खत्म हो जाती है तो कोई उसे पूछता भी नहीं। कोई उसे देखता भी नहीं। कोई उसे जानता भी नहीं। कोई उसका मित्र भी नहीं होता। तो क्या फायदा। सारी जिन्दगी अपनी सत्ता में फँसे रहे। सारी जिन्दगी अपनी सत्ता के घमण्ड में फँसे रहे और आज आप कहाँ हैं? और अब आपको क्या मिला? ये मैं नहीं कहती कि आखिरी दम तक हर आदमी को उसके प्यार की शक्ति से कुछ लाभ होता ही है पर सबसे बड़ी चीज़ है जो आदमी प्रेम करता है और उसके बाद में उसके प्यार की जिसके ऊपर छाया पड़ती है, जिसने उसका उपयोग किया हो, जिसने भी उसका दर्शन किया हो, जिसने भी उसका जलवा देखा है, वो पुश्त–दर–पुश्त याद रखा जाता है। याद ही की बात नहीं पर वो ही जलवा दूसरों में भी आता है और दूसरे भी अच्छा काम करने लग जाते हैं और दूसरे भी उसी की तरह होने का प्रयत्न करते हैं। ऐसे ही आदमियों का नाम आज अमर हो गया है। नहीं तो बेकार के लोगों को कौन जानता है। बेकार के, जिन्होंने अपनी सत्ता में सबको तकलीफ दी, गलत–गलत काम करे। थोड़े ही दिन में उन पर भी लोग उंगलियाँ उठाने लग जाएँगे। इस तरह के लोग संसार में, मैं मानती हूँ, बहुत कम हैं। इसलिए क्योंकि हम लोग बहुत चालाक हैं। अपने को बहुत होशियार समझते हैं।

तीसरे तरह के लोग होते हैं जो चोरी चकारी करते हैं। चकमा देते हैं, पैसा बनाते हैं। इस तरह की झूठी बातें करते हैं। उनका क्या हाल होता है वो मुझे बताने की कोई जरूरत नहीं है। तो ये सब करने की जरूरत क्या है? किसके लिए आप कर रहे हैं? कोई कहेगा कि हमारे बाल–बच्चों के लिए कर रहे हैं। कल यही बाल–बच्चे आपको जूते लगाएँगे कि नहीं? आपका मान क्यों करेंगे? आपमें कोई चरित्र नहीं तो आपका मान कौन करेगा? आपको कौन देखेगा? ये समझने की बात है कि ये सब व्यर्थ की लालसाएँ हैं और ये आपको आपसे दूर रखती हैं। आप अपने प्यार को समझिये। आपकी जिन्दगी में कोई ऐसे इंसान आए जिन्होंने आपको प्यार दिया हो, उनको आप जिन्दगी भर नहीं भूल सकते चाहे उन्होंने पैसा नहीं दिया; कुछ नहीं दिया। पर उनका प्यार, प्यार जरूर याद रहेगा और आप याद करेंगे कि इन्होंने मेरी ओर बहुत प्यार से देखा। मेरी ओर बहुत प्यार का हाथ बढ़ाया था। ये समझने की

बात है कि हम रोज़ देखते हैं। कोई नई बात तो नहीं, कोई इतिहास की बात तो नहीं, कि कोई किताबों में लिखी बात नहीं। कुछ बाईबल पढ़ने की ज़रूरत नहीं, कुरान को जानने की ज़रूरत नहीं। ये रोज़ की बात है। जब ये बात हम देख रहे हैं तो हम किसलिए तलवार लेकर निकले हैं? ऐसे हमारे अंदर जो बहुत सारी विकृतियाँ हैं वो इस तरह से बाहर आती हैं। मैं कहूँगी कि ईमानदारी की बात है कि कितने लोग हमारे देश में, जैसे कोई छूत की बीमारी लग रही है, पैसा खाते हैं। किसी से पूछो, "ये कौन हैं?" ये पैसा खाते हैं। "वो कौन हैं?" वो पैसा खाते हैं। जिसको देखो वो ही पैसा खाता है। और कोई उनका वर्णन ही नहीं। ये ही बताया जाता है कि ये पैसा खा रहा है, वो पैसा खा रहा है। अरे खाना वाना नहीं खाते, पैसा ही खाते हैं? ऐसे लोगों को भी आप देखिए कि अंत में उनका क्या हाल होता है। एक बार हम ऐसे ही गए थे। वहाँ बहुत भीड़ थी तो कुछ लोग थे बेचारे सीधे–साधे। उन्होंने नाक पर ऐसे हाथ रख लिया। मुँह पर हाथ रख लिया। बात क्या है? वो बोले, ये साथ जा रहे हैं न, इन्होंने बहुत देश का पैसा खाया है। मैंने कहा आप लोगों ने नाक मुँह क्यों बंद करे हैं। कहने लगे कि इनको सूँघने से हम लोग भी वैसे ही हो जाएँगे। ऐसा हमें डर लगता है। अरे ये बात बड़ी घिनौनी है।

हमारे संस्कृति के हिसाब से ये बड़ी घिनौनी बात है। ऐसा घिनौना काम करना हमारे संस्कृति में मान्य नहीं है। हमारी संस्कृति बड़ी ऊँची है। भारतीय संस्कृति एक दिन सारे संसार का मार्गदर्शन कर सकती है पर हमी अपनी संस्कृति को छोड़ कर के बैठे हैं! हर तरह से लज्जाशील रहना चाहिए। ऐसे बताया जाता है कि औरतों को लज्जाशील रहना चाहिए। ऐसा है कि बाहर से सीख करके लोग ऐसे कपड़े पहनने लग गए कि जिसमें लज्जा को तिलांजली दे दी गई। लज्जा–वज्जा कुछ नहीं। अरे भाई देवी के लिए कहा गया है "लज्जारूपेण संस्थिता।" आपके अंदर अगर देवत्व है तो आप लज्जाशील रहेंगे। आप बेशरम जैसे कपड़े नहीं पहनेंगे। आप बेशरम जैसे नहीं घूमेंगे। और अगर घूमते हैं आप तो आप में देवत्व नहीं है। तो किसी ने कहा कि हनुमान जी तो नहीं कपड़े पहनते हैं। तो क्या आप हनुमान जी हैं? ये भी कोई Explaination है कि हनुमान जी नहीं पहनते तो हम भी नहीं पहनते। अब हनुमान जी को क्या पहनने की ज़रूरत थी? भई तुम लोग इंसान हो और तुम इस देश के वासी हो। तुमको क्या ज़रूरत है कि हनुमान जी जैसे हम कपड़े नहीं पहनेंगे। बाकी देखिए तो सब लोग पहनते हैं। ऐसा कोई है जो कपड़े ठीक से नहीं पहनता तो हनुमान जी का उदाहरण ले लिया। महावीर जी का, महावीर जी एक बार अपने ही प्रांगण में ध्यान कर रहे थे तो श्री कृष्ण जी ने उनकी परीक्षा लेनी चाही। तो उनसे जा

कर कहा श्री कृष्ण जी ने कि "तुम मुझे अपना कपड़ा दे दो।" और उनका कपड़ा आधा फट गया था, तो भी वो ध्यान में थे। "ये आधा भी हमको दे दो।" उन्होंने दे दिया। और फिर चले गए अपने शयन ग्रह में, अपने सोने की जगह में, जा कर अपने कपड़े–वपड़े बदल लिए। वो एक छोटा सा बच्चा बन के आए थे। वो ठीक है। वो चले गए। अब देखिए कि उनके Statues बना रहे हैं। इतने गंदे लोग हैं, इनको कोई शर्म नहीं। इस तरह से महावीर जी का अपमान करते हैं। ये तो हमारे यहाँ गलत बात है कि जो गलत चीज़ है, उसी को ले करके चलेंगे। उसको फट से पकड़ लेगें और उसी को ले कर के दिखाएँगे, सौ बार। मैं कहती हूँ कि कुछ अक्ल रखो। ऐसे कहीं होता है? बिल्कुल शुरूआत में बताते हैं कि आदम और हव्वा। उसमें से हव्वा को जब पता चला उसको जब अनुभूति हुई कि हमें आगे का जानना है। वो जो साँप था वो स्वयं साक्षात् कुण्डलिनी थी। उसने जब बताया कि तुमको ज्ञान का फल प्राप्त करना है तब उसी वक्त उनको ये ज्ञान हुआ कि हम ऐसे नंगे घूम नहीं सकते हैं जानवरों जैसे। हमें कुछ पहनना चाहिए। फौरन उन्होंने पत्तियों से अपने कपड़े बनाये और पहन लिए। सर्वप्रथम ये ज्ञान होना चाहिए कि हम इंसान हैं जानवर नहीं। हम जानवर जैसे नहीं रह सकते। हालाँकि कुछ–कुछ जानवर इंसान से भी अच्छे होते हैं मैं मानती हूँ पर उनको भी लज्जा होती है। पर इंसान में लज्जा न हो और बड़े अपने को समझते हैं, हम बड़े Modern हैं और ये हैं वो हैं। अरे भई अगर लज्जा नहीं है तो देवी तत्व से तो आप हट गए। देवी तत्व में कहा जाता है कि "लज्जारूपेण संस्थिता।" इसलिए कभी –कभी उसका अतिक्रमण भी कर देते हैं। होता है कभी–कभी। वो नहीं करना चाहिए। अब आप घूँघट निकालो, बुर्का पहनो। इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। जो चीज़ लज्जाशील है वो उसकी आँखों में है। उसको ज़रूरी नहीं कि ये ढोंगपना करे। इसकी कोई ज़रूरत नहीं। पर मनुष्य में भी अतिक्रमण कर जाए। मनुष्य में क्या है कि किस तरह से वो एक दम से इस तरह से विक्षिप्त हो जाता है? कुछ बताना समझ में नहीं आता कि क्या बताएँ। कुछ भी चीज़ ले लो, उसको विक्षिप्त कर देना। ठीक है स्त्री में लज्जा होना। और लज्जा उसके अंदर की चीज़ है उसके अंदर में स्थित है ये देवी तत्व–हरेक स्त्री में, हरेक पुरूष में। लज्जा एक देवी तत्व है। ऐसा कहते ही साथ वो गए और चलो अब पर्दे लगाओ, ये करो वो करो, घूंघट निकालो। अरे भई ये अंदर की चीज़ है। स्त्री के अंदर की चीज़ है। लज्जारूपेण संस्थिता। और उसमें अनेक बातें निहित हैं। अब जैसे छोटी सी बात है अपने दोनों कंधों में दो चक्र हैं। Right में 'श्री' चक्र है और Left में 'ललिता' चक्र है। ये हम सिद्ध कर सकते हैं। आप उसको खोले फिरोगे तो नुकसान होगा आपको।

होना ही है। किस तरह का नुकसान होगा वो मैं बताना नहीं चाहती। कभी विस्तारपूर्वक बताऊँगी, पर क्यों ऐसा करते हो? क्या ज़रूरत है? पर पुरूष में ज़रूरी नहीं। पुरूष में ये बात नहीं। उनमें ये दोनों चक्र बिल्कुल पूर्णतया खुले हुए हैं पर स्त्री के लिए क्योंकि वह शक्तिशाली है उसके लिए जरूरी है उसे ढकना। अब ये समझने की बात है इसमें कोई दकियानूसीपने की बात नहीं। जिस चीज़ में आप दकियानूसी हैं वो बेवकूफी है। लेकिन जिस चीज़ में आप सतर्क हैं वो चीज़ ठीक है। सो सबसे बड़ी चीज़ है कि प्यार में मनुष्य एकदम सतर्क होता है। कहीं कुछ हो गया उसे पता चल जाता है। कहीं कुछ हो गया उसे समझ में आ जाता है। कहीं कुछ बात हो जाती है वो परेशान। कहीं कोई औरत है, बेचारी उसने आत्महत्या कर ली। तो एक मुझे लड़की मिली। मैंने कहा तुम क्यों परेशान हो। कहने लगी उसने आत्महत्या क्यों की। छोटी सी लड़की 10 साल की। मैंने कहा तुमसे किसने बताया। किसी ने बताया नहीं मैंने अखबार में पढ़ा कि उसने आत्महत्या कर ली। अब ये जो खिंचाव किसी अनभिज्ञ इंसान से, unknown आदमी से हो, ये क्या बात है। और छोटे बच्चों में ये बहुत होता है। बात ये है–बच्चे जो हैं बहुत ही ज्यादा निष्पाप, innocent. निष्पापिता में, स्वच्छता में उनको खसोटता है, उनको दिखता है। गलत काम ये नहीं होना चाहिए। वो रूठेंगे आपसे, वो आपसे शरमाऐंगे। लेकिन अंदर से प्यार। प्यार ही उनका जीवन और प्यार उनके जीवन का सार। दूसरा उनको किसी चीज़ से कोई नहीं। आप उनको कोई और चीज़ दे दीजिए वो समझ नहीं पाएँगे। इसमें क्या विशेषता है। पर उनकी माँ को हटा लीजिए या उनकी नानी से हटा लीजिए तो बड़ा बुरा हाल हो जाएगा। ये किस वजह से होता है। ये इतना छोटा सा बच्चा ये चीज़ कैसे जानता है और हम लोग क्यों नहीं जान पाते? हम लोग ये क्यों नहीं जान पाते कि ये चीज़ इस बच्चे में इतनी प्रगल्भ है, इतनी developed है और हम लोग जो अपने को बड़े भारी विद्वान समझते हैं हममें क्यों नहीं? क्योंकि विद्वता जो है वो अंधेरे में। हम विद्वान हैं अंधेरे के, उजाले के नहीं। हमें ये नहीं मालूम कि कौन सी चीज़ हमें आह्लादित करती है। कौन सी चीज़ हमें आडोलित करती है। कौन सी चीज़ से हमें सुख प्राप्त होता है और दूसरों को। समाज को किस चीज़ से सुख मिलेगा इस चीज़ को हम समझते नहीं। हम लोगों ने अपनी बना ली हैं प्रणालियां कि भाई ऐसे अवदान पहनो तो सुख मिलेगा।

अब बड़े आदमी हो गए, गले में, कण्ठ में मालाऐं पहन के घूमो, ये करो वो करो। तो हम बहुत बड़े आदमी हो गए। हमारी दुनिया पूजा करेगी। हमें बहुत बड़ा वो समझेगी। लेकिन ये अपने से भी धोखा देना है और लोगों को भी धोखा देना है। ग़र आपको अपने को धोखा देना है तो देते

रहिए। अंत में उसका फल आप पाइयेगा। दुनिया समझ जाएगी कि आप कितने गहरे पानी में हैं। सबसे बड़ी चीज़ है कि जो आपका धन आपके अंदर प्यार का सागर है उसको आप प्राप्त कीजिए।

सहजयोग का यही कार्य है। सहजयोग आपकी कुण्डलिनी जागृत करता है। कुण्डलिनी आपके जीवन का पूरा छाप है। उसको उठा करके और सहस्रार में बैठाना। सहस्रार आडोलित हो जाता है, प्रकाशित हो जाता है और उससे आपको आनंद के सागर का अनुभव होता है। आप देखते हैं कि आप आनंद का सागर हो गए। फिर आप देखते हैं कि आप प्यार का सागर हो गए। आपको आश्चर्य होता है कि आप तो ऐसे कभी थे नहीं। आप ऐसे कैसे हो गए। अरे आप थे। आप को मालुम नहीं था। अब कुण्डलिनी ने आपका संबंध कर दिया। अब ये देखिए। इसका संबंध ये जो चारों ओर फैली हुई बिजली की शक्ति है उससे हो गया। अब देखने को तो इतना छोटा सा लग रहा है। पर इसका संबंध होते ही साथ बिजली क्रियान्वित हो गई। ऐसे ही कुण्डलिनी का संबंध होते ही आप कार्यान्वित हो जाते हैं। जिन सहजयोगियों ने सहज को पाया है। मैं कहुँगी इसको सहज से पाया है। और पाया क्या है, वो प्यार का सागर जो हमारे मस्तिष्क में, जो हमारे सहस्रार में क्या कहना चाहिए, दबा हुआ है वो आज खुल गया। उसका संबंध हमारा हो गया और वो बह गया। उसके प्रवाह में हम बह गए। दुनिया भर की चीज़े होती ही रहती हैं। चलती ही रहती हैं। उसकी ग़र ऐसी बात, किस बात से आपको आनंद आएगा ये देखना चाहिए। जब आप आनंद का अनुभव करेंगे, उसी से आनंद आएगा। कोई कहे कि मुझे बड़ा आनंद आ रहा है तो ये कोई कहने की बात तो नहीं है ये तो होने की बात है। पर जब ये घटित होता है तो कुछ कहना नहीं पड़ता। अपने आप ही दिखाई देता है। आपका जीवन ही प्रज्जवलित हो जाता है और आपके जीवन से हज़ारों लोग उसे प्राप्त करते हैं। आनंद प्राप्त करते हैं। आज सहजयोग में आप लोग आए और यहाँ आकर आपने भी उस चीज़ को पा लिया। आपका भी संबंध हो गया Connection हो गया। अब इसको जमाए रखो और उसका आनंद उठाओ। उसके आगे बाकी सब चीज़े तुच्छ हैं। कोई लिखेगा माँ अभी मैं पार तो हो गया पर मुझे खुशी ही नहीं होती। ये तो ऐसा ही है कि Connection कुछ कम है। माँ मैं पार तो हो गया पर अभी मेरे घर में पैसा नहीं आया। इसका मतलब आप पार नहीं हुए। ऐसे बकवास जितने लोग करते हैं उनकी जो चिट्ठियाँ आती हैं वो मैं बंद करके रखती हूँ और उनसे कहती हूँ कि तुम ज़रा थोड़ा और अभी try करो। जब आदमी पार हो जाता है तो वो बदल ही जाता है। उसकी इन्सानी मोहब्बत प्यार में बदल जाती है। वो एक दूसरा ही प्राणी हो जाता है। उनकी शक्ल ही बदल जाती है। कुछ

देखते ही बनता है। अभी एक साहब आये थे इंग्लैण्ड से, बड़े मरीज, बीमार, मरीगल्ले लग रहे थे। अभी आए मैंने पहचाना नहीं। आपने पहचाना नहीं। मैंने नहीं पहचाना भाई, तुम कौन हो? मैं वो हूँ। और कह कर पैर पर गिर गए। मेरे भी आँखों से आँसू आ गए। जो आदमी अपने मरने के दिन गिन रहा था आज उसका ये हाल हो गया।

और ये अहंकार की जो बीमारी है इसका तो नाम लेते ही गला सूख जाता है। ऐसा ये पागलपन है। ऐसा ये स्वंय को नष्ट करने वाला एक राक्षस है जो कि आपको एकदम खत्म कर देगा और आप उसको Justify करते रहते हैं। उसको आप कहते हैं ठीक है ठीक है। इसलिए मैंने किया उसलिए मैंने किया। किस लिए किया हो सो सिर्फ तुम्हारे अंदर अहंकार भरा है। अहंकार इंसान में भरना तो इतना खराब है कि उससे खराब तो मैं सोचती हूँ कि कोई चीज़ हो ही नहीं सकती। मैं कोई विशेष हूँ मेरा ऐसा है। और फिर उससे जब वो देखता है कि मुझे कुछ लाभ नहीं हुआ। लोग मुझे देखते भी नहीं। कोई मुझे पूछता भी नहीं। तब वो ठीक होते हैं। फायदा क्या? पूरी तरह से आपने अपना नुकसान कर लिया। उसके बाद आप अहंकार, इसको कहते हैं ठीक करना। हर एक चीज़ से अहंकार चढ़ता है। पैसा हो तो, सत्ता हो तो, और भी कोई चीज़ हो तो अहंकार चढ़ता है। और फिर उसी अहंकार से आप गलत रास्ते पे जाते हैं। स्वयं को नष्ट करने का Self destructive काम करते हैं। तो क्या फायदा ऐसे अहंकार से कि जिससे आप अपने ही को नष्ट करते हैं? उसका बोलना अलग, चलना अलग, ढाल अलग। और उस अहंकार में वो किसी से मिलते नहीं। किसी से उनका पटता नहीं। वो अपने अलग रहते हैं। मुझे ये आदमी पसंद नहीं। मुझे वो आदमी पसंद नहीं। वो कभी भी किसी भी तरह से सम्मिलित नहीं होते। कभी भी वो दूसरों की बात नहीं सुनते। अपनी सुनाते रहते हैं। ऐसे अहंकारी आदमी का जीवन माने मरने से भी बदतर। एक साहब मैं, जानती थी, बड़े अहंकारी थे। बहुत बड़े आदमी थे। पार्लियामेंट में थे जाने कहाँ–कहाँ। पर जब वे मरे हैं तो चार आदमी उनको उठाने के लिए नहीं मिले। चार आदमी। तो उनको किराए पर चार आदमी बुलाने पड़े कि भाई इनकी लाश को उठाओ। ऐसे अहंकार से क्या फायदा कि मरते वक्त वहाँ पर चार आदमी भी नहीं थे। और कोई रिश्तेदार भी नहीं। कोई मिलने वाला भी नहीं। कोई कहने वाला भी नहीं। इंसान से मानो उठ गए वो। और उनका मानो कुत्ता था वो भी नहीं वहाँ खड़ा हुआ। मैंने कहा भई हद हो गई इस आदमी ने ऐसा कौन सा पाप कर्म किया सिवाय इसके कि उसमें बहुत अहंकार था। इस अहंकार में उनकी यह दशा हो गई कि मरते वक्त उनको कोई उठाने वाला भी नहीं!

जन कार्यक्रम रामलीला मैदान, 24.03.2002

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का *अंग्रेजी प्रवचन*)

मैं प्रेम के विषय में बहुत कुछ बता चुकी हूँ परन्तु मुझे ये सब हिन्दी में बताना पड़ा। परन्तु प्रेम के विषय की अभिव्यक्ति हिन्दी में ही बेहतर होती है। आप देखते हैं कि प्रेम करने की क्षमता भारत में बहुत अधिक है। अपने प्रेम के सहारे लोग जीवन बिता लेते हैं। लोग एक दूसरे को अपने प्रेम के माध्यम से समझते हैं। निःसन्देह पश्चिमी संस्कृति में रंगे भारतीयों में इस गुण का अभाव है। पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित भारतीय के मन में तो अपने देश के लिए भी प्रेम नहीं है। अपने देश को प्रेम करने वाले बहुत से लोग हैं। हमारे यहाँ भी ऐसे बहुत से लोग हैं। कुल मिलाकर भारतीय लोग अत्यन्त प्रेममय हैं। आप यदि किसी के घर पर जाएं तो वो आपसे प्रेम करते हैं आपको खाना आदि खिलाकर वो बहुत प्रसन्न होते हैं। घर में यदि कुछ उपलब्ध न हो तो वो तुरन्त बाहर से लाते हैं। वे अपने मित्रों को बताते हैं, टेलिफोन करते हैं। अतिथि की वो सेवा करते हैं। यह प्रेम–भाव पूरे विश्व में अन्यंत्र कहीं नहीं है। कहीं भी नहीं। अतिथि की सेवा में प्रायः लोगों को विश्वास ही नहीं है। अन्य देशों में कहीं भी आप जाएं, लोगों का नज़रिया अत्यन्त लेखे जोखे वाला होता है कि इससे क्या लाभ होगा।

भारत में आप यदि किसी निर्धन के घर में भी जाएंगे तो वो आपसे बैठने के लिए कहेगा, दूध आदि पेय आपको पेश करेगा। उनके हृदय बहुत विशाल हैं। आजकल हम लोग भी बहुत धन लोलुप होते चले जा रहे हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। इस देश में बहुत अधिक धन नहीं है इसीलिए लोगों में प्रेम करने की क्षमता बनी हुई है। इस बात पर आपने ध्यान दिया होगा। आप सब लोग आजकल यहाँ हैं, आप देखते हैं कि भारतीय कितने प्रेममय हैं। परन्तु आधुनिक भारतीय ऐसे नहीं है। आधुनिक भारतीय तो आप लोगों का मुकाबला करते हैं। मैं उनके विषय में कुछ नहीं कह सकती। परन्तु पारंपरिक लोग, भारतीय संस्कृति में विश्वास करने वाले वृद्ध लोग अत्यन्त प्रेममय हैं। यही कारण है कि तीन सौ वर्ष के अंग्रेजी साम्राज्य के बाद भी हम जीवित हैं और हमने अपनी संस्कृति को बनाया हुआ है। देश के प्रति उनके प्रेम के कारण ही ये सब संभव है। ऐसे प्रेममय लोग आपको कहीं अन्य नहीं मिलेंगे। किसी गाँव में या कहीं अन्यंत्र आप जाएं तो लोग आपकी सहायता करने का प्रयत्न करेंगे। आपके विदेशी होने के कारण वे आपका

सम्मान करेंगे। विदेशी या विदेश से आया व्यक्ति हमारे लिए सम्मानजनक होता है। आपको पुकारने या निमंत्रित करने के उनके तौर–तरीके अत्यन्त सम्मानजनक होंगे। विदेशियों के प्रति यहाँ के लोग अत्यन्त सम्मान दर्शाते हैं। परन्तु विदेशों में किसी अन्य देश से आए हुए व्यक्ति को बहुत तुच्छ माना जाता है। आप यदि विदेशी हैं तो आप उनकी दृष्टि में बहुत तुच्छ हैं। ओह, विदेशी हैं, ठीक है! परन्तु यहाँ पर विदेशियों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं होता। यहाँ पर लोग आपकी सराहना करेंगे, आपको समझेंगे और आपको प्रेम करेंगे। अपने प्रेम को वो अभिव्यक्त करेंगे। मैंने कभी किसी सहजयोगी को विदेश में अपमानित होते हुए या कष्ट उठाते हुए नहीं देखा। वे ऐसा नहीं करते। एक बार ऐसा हुआ कि चोरी हो गई और चोर कैमरे आदि ले गए। तो मैंने उनसे कहा, कि वो विदेशी हैं आपके विषय में क्या सोचेंगे। छोटे–छोटे बच्चों ने ये कार्य किया था। मेरी बात को सुनकर उन्होंने सब कुछ लौटा दिया। अतः विदेशी हमारे लिए सम्मानजनक होते हैं, प्रेम के योग्य। परंतु पश्चिम में मैंने ये बात कहीं भी नहीं देखी। निःसंदेह सहजयोगी इस मामले में भिन्न हैं। पश्चिमी देशों में विदेशियों पर शक किया जाता है। अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि ईसामसीह के देश में इस प्रकार का स्वभाव व संस्कृति कैसे आई! उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य तो प्रेम था। फिर क्यों उन्हें मानने वाले पश्चिमी देशों में इस प्रकार की संस्कृति पनपी, मैं नहीं समझ पाती। उनके सम्बन्धों की अभि–व्यक्ति में किसी को प्रेम करना अपराध माना जाता है। अब आप लोग यहाँ आए हैं, आप सहजयोगी हैं, आप उन्हें ये सब सिखाएं। उन्हें केवल प्रेम एवं करुणामय ही नहीं होना विदेशों से आए लोगों की भावनाओं को भी समझना है। निर्धन देशों से आए लोगों की देखभाल भी करनी है। इस चीज़ का इतना प्रसार होना चाहिए कि हम निर्धन लोगों की सहायता में

जुट जाएं और कष्टों से घिरे लोगों को प्रेम करने लगें। ये गुण सभी विदेशियों में पनपना आवश्यक है, विशेष रूप से सहजयोगियों में कि वे उन लोगों के प्रति अपने हृदय में प्रेम विकसित करें जिनके पास वो सब कुछ नहीं है जो हमारे पास है। मैं आपको बताना चाहूँगी कि आस्ट्रिया से आई एक महिला से मिलकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। वह यतीमखाना शुरु करना चाहती थी। कहने लगी, "श्रीमाताजी हमें भी अवश्य कुछ करना चाहिए।" मुझे बहुत प्रसन्नता हुई मैंने उससे कहा कि चिन्ता मत करो मैं तुम्हें सभी कुछ दूंगी। मैं तुम्हें भूमि दूंगी और भवन भी बना कर दूंगी तुम्हें केवल ये अनाथालय चलाना है। कहने लगी श्रीमाताजी हम तो इस कार्य के लिए 80 लाख रुपये एकत्र कर चुके हैं। हे परमात्मा, तुमने किस प्रकार इतना धन एकत्र कर लिया? सभी से ये धन एकत्र किया गया। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। अन्यथा लोग ईसाई धर्म के प्रचार के लिए धन दिया करते थे। आपको केवल इसलिए लोगों की सहायता करनी चाहिए क्योंकि उन्हें सहायता की आवश्यकता है। हो सकता है कि अगले जन्म में आपको भी सहायता की आवश्यकता पड़े। अतः बेहतर होगा कि इस प्रकार की उदारता, प्रेम और सूझ-बूझ को अपना लें और सभी मानवीय समस्याओं को समझें। मैं आपको बताती हूँ कि हमारी सारी समस्याएं, विश्व की सभी समस्याएं, सच्चे प्रेम से सुलझाई जा सकती हैं। इन सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है चाहे ये भारत की समस्याएं हों या अन्य देशों की। केवल प्रेम की कमी है। अतः आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करें; आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करके, चाहे इस बात को आप माने या न माने, आप प्रेम सागर में उतर जाएंगे।

परमात्मा आपको धन्य करे।

होली पूजा

पालम विहार, गुड़गाँव, 28.03.2002

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

श्री कृष्ण के समय में, द्वापर में, वो चाहते थे कि उनसे पूर्व अवतरित विष्णु जी के अवतरण, श्री राम द्वारा अपनाई गई मर्यादाएं तथा त्याग के बाहुल्य को सन्तुलित किया जाए। श्री राम की मर्यादाओं से समाज जो है वो बहुत शांत तो हो गया लेकिन उसमें कोई उल्लास नहीं रहा, आनंद नहीं रहा। इसलिए उन्होंने सोचा कि एक ऐसा पर्व होना चाहिए जिसमें आदमी मुक्त कंठ से हंसे, खुश हो जाये, आनंदित हो जाये। और वहीं हर एक चीज़ का जो परिहास होता है उसी तरह से उस दिन होली का भी आगमन होना ही था। परन्तु लोगों ने बहुत खराब तरीके से होली का त्यौहार मनाया और इसका नाम बदनाम किया। यहाँ तक कि मैंने इनसे कहा–'मैं तो होली नहीं खेलती।'

पर इसका जो इतिहास है वो ये है कि एक राक्षसी थी, होलिका, और प्रह्लाद की वो बहन थी और प्रह्लाद का पिता उसे बहुत सताता था। उसको (होलिका) वरदान था कि वो जलती नहीं है। उन्होंने कहा कि इस लड़के को फेंक दो आग में और होलिका तो जलेगी नहीं। होलिका उसे लेकर आग में कूद पड़ी। पर आश्चर्य की बात है कि वो जल गयी और प्रह्लाद नहीं मरा, और वो आग में से निकल आया साफ। ये बड़ी भारी एक घटना है जिससे लोग समझ गये कि पाप करना, दुष्टता करना, बुराई करना गलत बात है क्योंकि वो जल गयी। उसको वरदान था कि वो आग में जल नहीं सकती। ऐसी प्रथा है इसलिए हम होली को यह करते हैं। अपने यहाँ जो कुछ भी ऐसी बनी हुई चीज़ें हैं इसमें बड़ी सत्यता है। समझने की यह बात है कि हम लोग यदि बदमाशियां करें, किसी को खराब कहें, दूसरों को परेशान करें, तंग करें तो ये सब राक्षसी प्रवृत्तियाँ हैं। और Right sided लोगों में आ जाती हैं राक्षसी प्रवृत्तियाँ। इसलिए ऐसे कोई भी मन में विचार आये तो उससे दूर भागना चाहिए और उसको मान्यता नहीं देनी चाहिए। हमको सबके प्रति प्रेम बनाकर रखना चाहिए। यह खास चीज़ है। इसको गर समझ लें तो अच्छा है नहीं तो सब लोग होलिका हो जायेंगे, सब राक्षस हो जायेंगे। अब Right sided लोगों में आ जाती हैं। बड़ा भारी एक Lesson है इसमें कि वो तो बेचारा एक छोटा सा बालक था, उसको तो कुछ नहीं हुआ। उसको परमात्मा ने बचा लिया और ये औरत जल गयी जिसको वरदान था कि वो जल ही नहीं

पाएगी, तपस्या से उसने वरदान प्राप्त किया था, वो जल गयी और ये नहीं जला! उससे ये तात्पर्य होता है कि आदमी को भी, इंसान को यह सोचना चाहिए कि यह सब चीज़ें जो हमारे अंदर आती भी हैं? ये सब विध्वंसक हैं और इसको छोड़ देना चाहिए। सबके प्रति उदार प्रेम से रहना चाहिए। झगड़े करेंगे, मारा पीटी करेंगे, सब कुछ होता है पर ये कोई बड़ी अच्छी चीज़ें नहीं हैं, राक्षसी प्रवृत्तियाँ हैं और राक्षसी प्रवृत्तियों में हमको नहीं उतरना चाहिए क्योंकि हम लोग सहजयोगी हैं। ये एक विशेष स्वरूप के लोग हैं जो दुनिया को बदलने के लिए आये हैं, दुनिया को सुधारने के लिए आये हैं और उस तरफ ध्यान देना चाहिए। हम लोग बहुत ऊँचे हैं, इन सबसे बहुत ऊँचे हैं और इससे दुनिया को बचाना चाहिए। आजकल ये बहुत ज़्यादा फैल गया है। इसलिए ये जो घिनोनी बातें हैं ये कहनी चाहिएं, जो आततायी बातें हैं जिससे कि आप दूसरों पे हावी रहते हैं, दूसरों को सताना चाहते हैं, कुछ कहना चाहते हैं गन्दी बातें ये सारी बातें सहजयोग में करने की कोई ज़रूरत नहीं। आप स्वयं शक्तिशाली हैं। आपके अंदर ऐसी शक्तियाँ हैं जिससे ऐसा कोई भी आदमी आपको सताने की कोशिश करे तो भी आप प्रह्लाद के जैसे बच जाएंगे। आपको कोई कष्ट नहीं होगा। आप बहुत Protection में हैं। ऐसी कोई भी चीज़ आपको नष्ट नहीं कर सकती। इसलिए किसी के प्रति घृणा या कोई नाराज़गी, ये नहीं होनी चाहिए। सबके तरफ ये सोचना चाहिए कि बेचारा कितना बेकार है, इस तरह की इसके अंदर बातें हैं और इसको ठीक करना चाहिए। उसके प्रति यदि क्षमाशील हो जाएं तो ठीक हो सकता है। इसका एक बड़ा भारी उदाहरण प्रह्लाद है जो कि छोटा सा लड़का था और उसने पिता को चुनौती दे दी। उसका पिता राक्षस था पर देखिए कि वो तो बच गया और पिता की मृत्यु हो गयी। तो मृत्यु की बात नहीं है अपना भी पतन हो जाता है, हम लोग जो गलत सलत बात सोचते हैं, अपना बहुत पतन होता है। इसलिए कभी भी किसी के प्रति घृणा या उसके प्रति द्वेश भाव हो तो उसको निकाल देना चाहिए। ये होली का आपके लिए संदेश है।

परमात्मा आपको धन्य करें।

गुड़ी पड़वा पूजा

पालम विहार, गुड़गाँव, 13.04.2002

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

हम लोग जो मनाते हैं गुड़ी पड़वा ऐसा हर एक जगह है, साउथ में भी है। हर जगह ये त्यौहार मनाया जाता है। जो सम्वत शुरु हुआ है और जो शालीवाहान ने भी सम्वत शुरु किया वो सब एक ही दिन पड़ते हैं। वो आज का ही दिन है और सारे देश में उसको माना जाता है। उसी के हिसाब से सब हमारी तिथियां और सब हमारी तारीखें बनायी जाती हैं खास करके त्यौहार। और हम लोग चन्द्रमा के कैलेंडर पर चलते हैं। विदेशी लोग जो हैं वो सूर्य के कैलेंडर पर चलते हैं इसलिए उनकी तारीख कभी बदलती नहीं है।

अपने यहाँ हर एक त्यौहार हमेशा चन्द्र की स्थिति पर होता है और इसलिए हमारे यहाँ की तारीख भी बदलती है और अलग–अलग दिन वही त्यौहार होता है, इस प्रकार चन्द्रमा का जो है हम लोग बहुत मान करते हैं और उसके अनुसार जो अपनी सब तिथियां मानते हैं। उसका कारण ये है कि चन्द्रमा का असर मनुष्य पर ज़्यादा होता है, सूर्य का नहीं होता और चन्द्रमा के साथ जो और ग्रह हैं उनका भी असर मनुष्य पर होता है। इसलिए चन्द्रमा को ही हम लोग मानते हैं और उसी के अनुसार हम अपने जो भी त्यौहार हैं, जो भी तिथियां हैं वो मानते हैं। एक तारीख ऐसी जरूर है जो सूर्य के रूप से होता है। सूर्य जब दक्षिणायण से उत्तरायण में आता है उस दिन जरूर हम एक त्यौहार मानते हैं। वो सारे देश में वही दिन माना जाता है। अब जो है, चन्द्रमा के हिसाब से, ज्योतिष शास्त्र भी हमारे यहाँ चन्द्रमा के हिसाब से चलता है। ज्योतिष में भी चन्द्रमा की स्थिति देखी जाती है। कहाँ है, क्या है। उसी के अनुसार ज्योतिष शास्त्र बनाया जाता है। और इसीलिए जो पहले हमारा कैलेंडर बनाया गया जिसको कि हम लोग कहते हैं शालीवाहन–शक् वो भी सब चन्द्रमा पर बना हुआ है। सारी तिथियां भी चन्द्रमा पर निर्भर हैं, जिन लोगों को अपनी तिथि का पता नहीं होगा वो समझ नहीं पाएंगे कि क्यों अलग–अलग तिथि पे ये त्यौहार आते हैं।

वो जो भी हो हमें सोचना चाहिए कि चन्द्रमा का इतना महत्व हम लोगों ने किया उसका कारण यह है कि चन्द्रमा से जो हमारे ऊपर असर आते हैं उसके बारे में हम सतर्क रहें। चन्द्रमा से सबसे बड़ा असर ये आता है कि हमारी Left Side उस पर आधारित है इसके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं, और ये जो Left Side हमारे

अंदर आ गयी है जिसका कि हम लोगों ने विशेष रूप से जतन किया हुआ है, इस देश ने माना हुआ है, उसकी वजह यह है कि इसके परिणाम हमारे ऊपर मानसिक हैं, Left Side में जो असर आते हैं वो मानसिक हैं। बौद्धिक नहीं हैं, मानसिक हैं, उसको हम कंट्रोल नहीं कर सकते। जो मानसिक तकलीफें हैं उसको हम कंट्रोल नहीं कर सकते। चन्द्रमा के जो असर हैं उसको हम कंट्रोल नहीं कर सकते। इसलिए चन्द्रमा की तिथि देखी जाती है। जैसे अमावस्या चन्द्रमा की होगी या पूर्णिमा होगी तो गर किसी आदमी में मिर्गी की बीमारी हो या इस तरह की मानसिक तकलीफ हो तो बहुत बढ़ जाएगी। उस वक्त में एकदम दिखाई देगा कि इनको असर आया है पूर्णिमा का या इन पर असर आया है अमावस्या का, इसलिए हम लोग इस तरफ बहुत संवेदनशील हैं कि चन्द्रमा कहाँ है कौन सी तिथि में हैं, इसका Calculation हमारे यहाँ इतना बारीक किया हुआ है कि हमारे यहाँ ग्रहण कब लगेंगे और ग्रहण की स्थिति क्या रहेगी, वह कब टूटेंगे, इतना ज़्यादा हमारे यहाँ उसपर विचार किया गया है और इतना हमारे अंदर उसका ज्ञान है। इससे दिखता है कि अपने देश में चन्द्रमा के असर का बहुत ख़्याल किया गया है, विचार किया गया है और उसपर आधारित उन्होंने इतनी बातें कही हुई हैं। अब ऐसा है कि Modern Times में हम लोग आ गए तो सूर्य के ही ऊपर से सब चलता है, पर यह बात सही नहीं है। हमको चन्द्रमा की स्थिति ज़रूर देखनी चाहिए कि आज क्या स्थिति है कल क्या स्थिति है? आज कौन सा असर आएगा? यह बड़ा गहन विषय है जिसके बारे में जानना चाहिए और अपने देश में इसके ऊपर बड़ा विचार किया जाए।

अब आज के दिन जो इतना माना जाता है वो नववर्ष है इसलिए और चन्द्रमा का आगमन है इसलिए भी आज का दिन माना जाता है। इस दिन जो गुड़ी–पड़वा कहते हैं जिसको कि एक लोटे के अन्दर एक पताका लगाके और पताके का डंडा वो जो लोटा होता है उसमें लगा देते हैं, यह जो लोटा होता है यह Represent करता है कुण्डलिनी को और उसमें समर्पित होकर के किया हुआ है। शालीवाहन लोग जो थे वो देवी भक्त थे और कहा जाता था कि ये देवी को शाल देते थे। पर वो सातवाहन भी कहलाए जाते थे, शुरु में क्योंकि वो सात चक्रों को मानते थे। इसलिए उनको, शालीवाहन, बाद में बदल गया, पर है सातवाहन। सातवाहन से अब शालीवाहन हो गए। पर शालीवाहन का प्रतीक वही बनाते हैं कि गुड़ी खड़ी करेंगे। गुड़ी के माने झंडा, वो प्रतीक रूप और उसके ऊपर में–एक जो लोटा होता उसका एक Particular Shape होता है वो भी कुण्डलिनी का दयोतक है। वो कुण्डलिनी के पुजारी थे। कुण्डलिनी को मानते थे। इसलिए उन्होंने वो चीज़ इस तरह की बनाई है

और जो मानता है वो ऐसी गुड़ी अपने घर में खड़ी करता है, एक झंडा लगाता है। इसका कारण वही है कि वो लोग चाहते थे कि हम इस दिन कुण्डलिनी का स्वागत करते हैं और कुण्डलिनी का विशेष रूप से प्रदर्शन करते थे। लोगों को पता ही नहीं कि ऐसा क्यों करते हैं, करते ही जा रहे हैं। कोई चीज़ करते रहते हैं। पर पूछना तो चाहिए कि ऐसा क्यों! यह क्या चीज़ है।

क्योंकि वो सातवाहन थे, सातवाहन को मानते थे और कुण्डलिनी के रक्षक थे, कुण्डलिनी की पूजा करते थे इसलिए उन्होंने इस तरह से अपना नववर्ष शुरु किया। नववर्ष में उन्होंने ये द्योतक मतलब ऐसा मनाया कि एक लोटा हो और उसके नीचे ये झंडा, ये गुड़ी लगाई जाए। यहाँ इस चीज़ को इतना मानते नहीं और कोई जानता भी नहीं है। पर सम्वत सर भी जो छपता है या विक्रम, वो भी आज ही से शुरु हुआ है। हो सकता है दोनों के साल अलग हों पर दिन यही है। ये भी इसी अमावस्या को मानते हैं और वो भी इसी अमावस्या को मानते हैं। तो इस तरह से ये जो गुड़ी पाड़वा है, ये जो चीज़ है ये दोनों में माना जाता है। अमावस्या नहीं होती, प्रथमा जिसको कहते हैं पहला दिन, वो है आज, इसीलिए आज चन्द्रमा वगैरह कुछ नहीं। आज आकाश में, पूरा अंधेरा है। पर हम लोगों को जानना चाहिए कि हमारे देश के अंदर ये क्यों होता है और उसके अंदर उसकी क्या विशेषता है। जब तक हम लोग अपने देश के बारे में नहीं जानेंगे, हमें उसके प्रति आदर, प्रेम नहीं हो सकता। बहुत बड़ी–बड़ी गहरी चीज़ें हैं। पर वो गहरी चीज़ें हम जानते ही नहीं। कह दिया कलियुग है। ये कलियुग क्यों है, कैसे आया? इसका क्या मतलब है? ये सब हम लोग जानते नहीं हैं, सिर्फ सुन–सुन के बातें करते हैं, पर इसकी बड़ी भारी कहानी है कलियुग की, परिक्षित राजा के Time की। वो कोई जानता ही नहीं, कोई पढ़ता ही नहीं। सब बेकार की चीज़ें पढ़ते रहते हैं। ज़्यादा से ज़्यादा कभी हो तो रामायण पढ़ लेंगे पर इसके पीछे में जो संदेश है या इसके पीछे में जो शास्त्र है, उसके बारे में कोई जानता नहीं।

तो हम सहजयोगियों को चाहिए कि हम जानें, हमारे देश की जो सभ्यता है वो कहाँ से आयी और किस तरह से हम इस स्थिति में पहुँचे, ये जानना चाहिए, क्योंकि उसको जाने बगैर हमारे अंदर यही परदेसी दिमाग आ जाएगा और उससे अहंकार और ये सब चीज़ें आ जाएंगी। बेहतर है कि समझ लें कि हमारे अंदर जो ये चीजें हैं वो कहाँ से आयी हैं उसका क्या महात्म्य है। ये हम क्यों करते हैं? बस यूं अपना करते हैं सब लोग, तो हम भी करते हैं। ये बात ठीक नहीं, उसको समझ लेना चाहिए। यही मैं चाहती हूँ कि सब सहजयोगी इसको समझ लें, जान लें। ग़र हमारे पास Time होता तो हम सब लिख देते पर हमारे पास Time नहीं है। आप लोग इसको पढ़ सकते

हैं और जान सकते हैं। अपने यहाँ सारी किताबें हैं। हिन्दुस्तान में हिन्दी भाषा में इतनी किताबें हैं, कोई ये किताबें पढ़ता ही नहीं। सारी दिल्ली में ही मिलती हैं। मैंने तो दिल्ली में ही खरीदीं थी। तो इनके बारे में जानना चाहिए, जो पौराणिक है जो कहने को पौराण हैं लेकिन उसमें बहुत सी फायदे की बातें हैं जो समझ लेने से हम समझ सकते हैं कि भारतवर्ष के नींव में क्या चीज़ है। हम लोग हिन्दुस्तानी क्यों सबसे श्रेष्ठ माने जाते हैं? मतलब सामाजिक रूप से न हों पर सांस्कृतिक रूप से हम लोग बहुत श्रेष्ठ माने जाते हैं। और दूसरा ये कि धर्म में कैसी स्थापना करना चाहिए, धर्म क्या है बहुत कुछ गहरी बातें लिखी हुई हैं। मैं चाहती हूँ कि आप लोग कुछ इसका अध्ययन करें, पढ़ें तो एक नई दिशा आप लोगों को मिल सकती है। क्योंकि विदेशी भाषा जो है या विदेशी जो कुछ भी ज्ञान है वो बहुत ही ज़्यादा Superficial कहलाती है। इसलिए आप लोग कोशिश करें कि आपके यहाँ सस्ता साहित्य है, मैंने वहीं से बहुत सी किताबें खरीदीं, सुन्दर है दुकान, उसी दुकान से बहुत सी किताबें लाई थी, बहुत सस्ती मिलती हैं। पैसा नहीं लगता। पर Time चाहिए पढ़ने के लिए। फालतू चीज़ें हम पढ़ते रहते हैं, फालतू सिनेमा देखते रहते हैं, फालतू News पढ़ते रहते हैं, पर जो हमारा अध्ययन होना चाहिए वो बहुत गहन और ऐसी चीज़ों पे होना चाहिए जो हमारे पास बहुत सालों से आयी है। आज का दिन बड़ा शुभ है। वैसे, मेरी इतनी तबीयत अच्छी नहीं थी पर मैंने कहा कि ऐसे शुभ अवसर पे क्या करें, पूजा में तो जाना ही है।

अनंत आशीर्वाद

सहस्रार पूजा

कबैला, 06.05.2002

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

कल की रात पूर्णतया अंधेरी रात थी। इसे अमावस्या कहते हैं। इसके साथ शुक्ल–पक्ष (Moonlit Phase) का आरम्भ हुआ है। आज हम उस पर्व को मनाने के लिए यहाँ एकत्र हुए हैं जब सहस्रार खोला गया था। आपने यह फोटो में भी देखा है। वास्तव में यह मेरे मस्तिष्क का चित्र था जिसमें दर्शाया गया कि सहस्रार किस प्रकार खोला गया। अब मस्तिष्क के प्रकाश का भी फोटो लिया जा सकता है। आधुनिक काल की यह महान उपलब्धि है। आधुनिक काल में ऐसी बहुत सी चीज़ें आई हैं जिनसे परमात्मा के मस्तिष्क को प्रमाणित किया जा सकता है, मेरे विषय में भी यह प्रमाण दे सकता है। यह आपको विश्वस्त कर सकता है कि मैं क्या हूँ। ऐसा होना बहुत आवश्यक है क्योंकि आधुनिक काल में इस अवतरण का पहचाना जाना महत्वपूर्ण है। इसका पूरी तरह से पहचाना जाना। सभी सहजयोगियों के लिए ये शर्त है।

आइए अब देखते हैं कि आधुनिक मानव के मस्तिष्क में क्या चल रहा है। आज के मनुष्य के मस्तिष्क में यदि हम झाँके तो पता चलता है कि सहस्रार पर आक्रमण हो रहा है। बहुत समय से ये आक्रमण चल रहा है परन्तु आज के युग में स्थिति बहुत ही खराब हो गई है। लोग, अपने मस्तिष्क–क्षेत्र (Limbic Area) को अत्यन्त संवेदनशील बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। अत्यन्त उदासी से भरे उपन्यास, उदासी से भरी विचारधाराएं और अत्यन्त उदास संगीत आदि जैसे मूर्खतापूर्ण यूनानी त्रासदी। इन सारी चीज़ों का उद्भव मध्यकालीन युग से है और अब ये इस नवयुग तक आ पहुँची हैं। मस्तिष्क क्षेत्र पर आकर व्यक्ति की स्थिति बिल्कुल बेकार थी जिसने उसे अत्यन्त उदासीन बना दिया। ऐसी स्थिति में विपत्तियों से बचने के लिए व्यक्ति शराब आदि की लत में फँस जाता है। आज इस आधुनिक युग में लोग अत्यन्त गतिशील (Over active) हो गए हैं। अत्याधिक सक्रियता का आरम्भ हुआ और उसके साथ–साथ मस्तिष्क भी अत्याधिक सक्रिय हो उठा। पहले की उदासीन स्थिति के साथ–साथ ये अत्याधिक सक्रियता की दूसरी अति में चला गया। अतः इसे शान्त करने के लिए लोग नशे–सेवन करने लगे और उन्होंने भयानक संगीत अपना लिया। इस प्रकार से लोगों ने अपने सहस्रार क्षेत्र (Limbic Area) को संवेदनहीन कर लिया। जो नशा आरम्भ में मात्र स्फूर्तिप्रद होता था बाद में उसी को बहुत अधिक मात्रा में लेने

की आवश्यकता पड़ने लगी। और फिर ये नशे अत्यन्त तीव्र स्तर के होते हैं। इस तरह से चलता रहा और अब हम जानते हैं कि लोग सोचते हैं कि वे केवल इन नशों से ही जीवित रह सकते हैं। क्यों? उस तनाव के कारण जिसके बारे में वो हमेशा बात करते हैं। आधुनिक काल में एक ऐसी स्थिति खड़ी हो गई है जिसे हम तनाव (Tension) कहते हैं। पहले ये तनाव न हुआ करता थे। लोग कभी तनाव की बात न करते थे। अब सभी लोग कहते हैं मैं तनाव में हूँ। आप मुझे तनाव दे रहे हैं। ये तनाव हैं क्या?

ये तनाव मेरे अवतरण के कारण है क्योंकि मस्तिष्क क्षेत्र मेरे विषय में जानना चाहता है और ज्यों–ज्यों सहज योग बढ़ रहा है लोगों में कुण्डलिनी उठने का प्रयत्न कर रही है। क्योंकि आप लोग माध्यम बनते हैं, जहाँ भी आप जाते हैं चैतन्य–लहरियों का सृजन करते हैं और ये चैतन्य लहरियाँ सन्देश के रूप में कुण्डलिनी को चुनौती देती हैं और परिणामस्वरूप कुछ लोगों में कुण्डलिनी उठ जाती है। हो सकता है कि सहस्रार तक न उठे या सहस्रार तक उठकर भी ये वापिस खिंच जाए क्योंकि उनमें कुण्डलिनी की पहचान नहीं है, उसके प्रति श्रद्धा नहीं है। अतः जब–जब भी आप कुछ करते हैं तो कुण्डलिनी उठती है और आपको दबाव देती है क्योंकि आपका सहस्रार खुला हुआ नहीं है। यह दरवाजा बन्द है इस बन्द दरवाजे के कारण कुण्डलिनी उनके सिर में दबाव बनाती है जिसे वे समझ नहीं पाते और उसे तनाव (Tension) की संज्ञा दे देते हैं। वास्तव में कुण्डलिनी स्वयं को बाहर निकालने का प्रयत्न कर रही होती है परन्तु यह निकल नहीं पाती।

आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेने के पश्चात् भी लोग यदि अपने सहस्रार को ठीक नहीं करते तब भी उन्हें तनाव हो सकता है। यद्यपि सहस्रार को बहुत वर्ष पूर्व खोल दिया गया था फिर भी हमे अपने सहस्रार को स्वच्छ करने के लिए कुछ कार्य करने होंगे। पहला कार्य सहस्रार का भेदन है। एक बार जब इसका भेदन हो जाता है, ब्रह्मरन्ध्र खुल जाता है तब हम परमात्मा के चैतन्य को महसूस करने लगते हैं और यह चैतन्य हमारे ईड़ा और पिंगला मार्गो को भी प्रभावित करने लगता है। यह चैतन्य, कुण्डलिनी नहीं, जो कि चहुँ ओर व्याप्त है हमारे बाएं और दाएं अनुकंपियों को शान्त करता है, और इसके कारण हमारे चक्र खुलते हैं और कुण्डलिनी के अधिक से अधिक तन्तु इन चक्रों का भेदन करने लगते हैं।

यही कारण है कि मैं सदैव सहजयोगियों से कहती हूँ कि अवश्य ध्यान धारणा करें। आपका सहस्रार यदि ठीक है तो आपके सभी चक्र ठीक होंगे। क्योंकि आप जानते हैं कि सहस्रार स्थित चक्रों की पीठ ही इन चक्रों के नियंत्रण केन्द्र हैं जो मस्तिष्क में तालु क्षेत्र के ईर्द–गिर्द विद्यमान है। अतः

यदि आपका सहस्रार स्वच्छ है तो सभी कुछ अत्यन्त भिन्न प्रकार से घटित होगा।

किस प्रकार सहस्रार को ठीक रखा जाए ये बहुत बड़ी समस्या है। इसके विषय में लोग हमेशा मुझसे पूछते हैं। आप जानते हैं मैं सहस्रार में विराजती हूँ। सहस्र दल कमल में मैं अवतरित हुई हूँ इसीलिए मैं इसका भेदन भी कर सकती हूँ। आज जिस रूप में आप मुझे देखते हैं उसके विषय में कहा गया है 'सहस्रारे महामाया।' अतः यह भ्रान्ति या भ्रम की स्थिति है जो आपके लिए हमेशा बनी रहती है। ये अत्यन्त भ्रामक है। इसे ऐसा ही होना था क्योंकि यदि मेरे अन्दर से सभी प्रकाश निकल रहे होते या जिस तरह से कल आपने सहस्रार को देखा जिसमें चारों ओर से निराकार रंग फूट रहे थे और प्रकाश निकल रहा था, तो आप मेरा सामना न कर पाते, मुझे सहन न कर पाते।

अब इस सहस्रार की देखभाल आपने करनी है। ये आपकी माँ का मन्दिर है। आप जब कहते हैं कि आप मुझे अपने हृदय में बिठाते हैं तो वास्तव में आप मुझे अपने सहस्रार में बिठाते हैं क्योंकि, जैसा कि आप जानते हैं, यहाँ पर ब्रह्मरन्ध्र है। ये तालू अस्थि क्षेत्र है जिसमें पीठ हैं, वह केन्द्र जो हृदय का नियंत्रण करता है, जो कि सदाशिव का स्थान है या आप कह सकते हैं शिव का स्थान है तो जब आप मुझे अपने हृदय में स्थापित करते हैं तब आप मुझे वास्तव में सहस्रार में बिठाते हैं। अतः श्री शिव को हृदय से ब्रह्मरन्ध्र में या ब्रह्मरन्ध्र से हृदय में लाने में दो तरह के लोगों को समस्या आती है। कुछ लोग जो हृदय से बहुत संवेदनशील हैं जैसे हम देखते हैं इटली के लोग हृदय से संवेदनशील हैं। मुझे देखते ही पहला कार्य जो वे करते हैं वह है अपने हाथों को हृदय पर रख लेना और यही सब कुछ है। आरम्भ में मुझे अपने हृदय में महसूस करना बहुत सुगम है। अब आप कह सकते हैं कि ये किस प्रकार करें? आपको भी मुझे वैसे ही प्रेम करना होगा जैसे मैं आपको

करती हूँ। आपको परस्पर भी प्रेम करना होगा क्योंकि आप मेरे अन्दर हैं और किसी अन्य को ये उपदेश नहीं दे सकते कि प्रेम किस प्रकार करना है। प्रेम अन्तः स्थित है। आपके हृदय को खोलते ही प्रेम की अभिव्यक्ति होती है।

अब इसमें रूकावट क्या है? आइए इस चीज़ को देखें। सर्वप्रथम बन्धन हैं। पश्चिमी देशों में प्रेम की अभिव्यक्ति को वास्तव में पाप माना जाता है। किसी से ये कहने में भी समय लगता है कि में तुम्हें प्रेम करता हूँ (I Love You)। परन्तु मैं तुमसे घृणा करता हूँ (I Hate You) कहना वहाँ बहुत आसान है। कोई बच्चा भी कहता चला जाएगा मैं तुमसे घृणा करता हूँ, मैं तुमसे घृणा करता हूँ, मैं तुमसे घृणा करता हूँ। किसी से भी घृणा करना अपराध है अतः ये कहना कि मैं तुमसे घृणा करता हूँ पाप का कार्य है। व्यक्ति को निरन्तर कहना चाहिए 'कि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।' जो व्यक्ति आपको इतना प्रिय है उससे यही कहना चाहिए। जिसने आपका कोई हित किया है उस व्यक्ति से आपको प्रेम करना चाहिए। परन्तु साक्षात् आदिशक्ति ने जब आपको पुनर्जन्म प्रदान किया है तो उन्हें प्रेम करना तो आपके लिए सुगमतम होना चाहिए। जब वो कहती हैं कि मैंने सभी लोगों को अपने शरीर के अन्दर स्थान दिया है तब वो परस्पर प्रेम करना और भी सुगम हो जाना चाहिए। **अतः इसी प्रेम के माध्यम से सहस्रार की सभी बाधाएं दूर होती हैं।**

इस प्रेम में कोई शर्त नहीं होती, इसमें कोई अवरोध नहीं होता, जो किसी प्रकार की राहत नहीं माँगता। जो किसी प्रकार की वापिसी नहीं चाहता, जो निर्वाज्य है। परन्तु बन्धन बहुत हैं। सर्वप्रथम बन्धन की समस्या तब आती है जब आप सोचते हैं कि यह कारण मुझे किसी से घृणा करने के लिए विवश करता है या मैं फलाँ व्यक्ति से प्रेम नहीं कर सकता क्योंकि उसके लिए ये शर्त है। परन्तु एक-एक करके इन कारणों को यदि आप देखें तो ये हास्यास्पद हैं इन्हें सुगम बनाने के लिए मैं चाहूँगी कि आप बन्धनों के विषय में अच्छी तरह से समझें। एक बार मैंने अत्यन्त दिलचस्प लेख पढ़ा – 'रोमांस की हत्या किसने की' (Who Killed the Romance?) लेखक ने बताया कि ये कार्य हज्जाम (Hair Dresser) ने किया। मैं हैरान थी कि किस प्रकार वह रोमांस को हज्जामों से जोड़ रहा था। लोग क्योंकि हज्जामों के पास जाया करते हैं और एक व्यक्ति को विशेष प्रकार की शैली पसन्द है, वह हमेशा कहता कि मुझे बालों की इसी शैली से प्रेम है। मान लो उसकी पत्नी या मंगेतर किसी अन्य प्रकार के बाल बनवा ले, क्योंकि रोज नई-नई चीजें आ रही हैं, तो तुरन्त पति कहेगा, तुम्हारे बालों की शैली के कारण मैं तुमसे नफरत करता हूँ।' क्योंकि उसे तो एक ही प्रकार की बालों की शैली पसन्द है और इसी के कारण वह उससे प्रेम करता है। परन्तु प्रेमिका या पत्नी को बालों की कोई

अन्य शैली पसन्द है तो आप उससे घृणा करते हैं, आप कहते हैं कि ये मुझे पसन्द नहीं है। **मुझे पसन्द है या मुझे पसन्द नहीं है कहना ही इस बात का चिन्ह है कि अभी तक बहुत अधिक बन्धन बाकी हैं।** आप भली भांति बाल बनाएं, ठीक से वस्त्र पहनें परन्तु आपके बाहर आते ही अचानक यदि लोग कहें, "ओह, मुझे इससे घृणा है! ये कहने वाले आप कौन हैं? किसी से भी ये कहने का अधिकार हमें क्यों है? न्यायालय ने आपको इसका न्यायाधीश नहीं नियुक्त किया तो क्यों किसी को चोट पहुँचाने के लिए हम कहते हैं मैं इससे घृणा करता हूँ। इसके विपरीत आपको कहना चाहिए कि ये शैली ठीक है मुझे पसन्द है परन्तु तुम इससे भी बेहतर शैली अपना सकती हो। प्रेम का यही चिन्ह है। प्रेम में आप चाहते हैं कि वह व्यक्ति इस प्रकार की वेशभूषा पहने जो आकर्षक हो परन्तु लोगों को देखने का यह अत्यन्त स्थूल तरीका है। तत्पश्चात् हम किसी व्यक्ति को देखने जाते हैं कि वह कितना बुद्धिमान है, कितना चुस्त है, कितना योग सिद्ध है, कितना आकर्षक है?

आकर्षक एक अन्य शब्द है जो अत्यन्त भ्रामक है। मस्तिष्क के कुछ इस प्रकार के बन्धन होते हैं कि आप सोचते हैं कि उस शैली विशेष वाला व्यक्ति ही प्रेम करने योग्य है। आपका प्रेम उससे केवल बाह्य होता है या कुछ लोग बिल्कुल प्रेम नहीं करते फिर भी वो दर्शाते हैं कि हम प्रेम करते हैं क्योंकि उस व्यक्ति के पास धन का प्राचुर्य है। निःसन्देह वह व्यक्ति आपको अपना धन नहीं देगा। परन्तु आप उसको इसलिए प्रेम करते हैं क्योंकि उसके पास बहुत पैसा है या उसके पास एक अच्छी गाड़ी है या वह बहुत अच्छे वस्त्र पहनता है, आदि-आदि। तो व्यक्ति में इस प्रकार की धारणाएं प्रेम की हत्या है, प्रेम की यदि हत्या हो जाएगी तो आनन्द समाप्त हो जाएगा। प्रेम के बिना आनन्द प्राप्त नहीं किया जा सकता। मैं कहती हूँ कि प्रेम एवं आनन्द एक ही चीज़ है। केवल तभी यह सूक्ष्मातिसूक्ष्म होता चला जाता है। तभी आप अपने बच्चों से प्रेम करने लगते हैं, ये आम बात है। मेरा कहने से अभिप्राय है कि कुछ लोग अपने बच्चों से भी प्रेम नहीं करते! सभी प्रकार के लोग हैं परन्तु वे कहते चले जाएंगे ये मेरा बच्चा है, ये मेरा बच्चा है। ये भी प्रेम की मृत्यु है। जैसा मैंने आपको पहले भी बताया है पेड़ का रस ऊपर को उठता है, सभी पत्तों में जाता है, फलों में जाता है, अन्य सभी हिस्सों में जाता है और फिर वापिस आ जाता है। इसमें लिप्तता नहीं होती। रस यदि पेड़ के किसी विशेष भाग से या किसी एक फूल से लिप्त हो जाए, क्योंकि यह अधिक सुन्दर है, तो पूरा पेड़ मर जाएगा और फूल भी मर जाएगा। तो यह प्रेम की मृत्यु है। अतः आपको इस प्रकार का प्रेम करना चाहिए जिसमें कोई चिपकन न हो, मोह न हो। जब-जब भी मैं ये बात कहती हूँ तो लोग

पूछते हैं ऐसा किस प्रकार किया जाए? आत्मा का प्रेम ऐसा है। परन्तु बन्धन ग्रस्त मस्तिष्क का प्रेम बिल्कुल भिन्न होता है। बन्धन ग्रस्त मस्तिष्क सीमित रूप से प्रेम कर सकता है क्योंकि ये बन्धनों में फँसा हुआ है।

हमारे अन्दर विद्यमान अहं प्रेम का कट्टर दुश्मन है। अहं हमारे सिर के शिखर पर गुब्बारे की तरह से है और यही सभी प्रकार के तनाव का कारण है। इस प्रकार के बन्धन, जैसे मान लो वो कोई कालीन देखते हैं और उनके मस्तिष्क के अनुसार ये अच्छा नहीं है। तो वो एकदम से बोलेंगे, ये कैसा कालीन है या कुछ और। इस प्रकार के तुच्छ बन्धन या कुछ उच्च स्तर के बन्धन कि आप अपने देश से प्रेम करते हैं क्योंकि मेरा देश सर्वोत्तम है चाहे वहाँ पर लोगों की हत्या ही की जा रही हो, चाहे वह विश्व शान्ति को ही क्यों न नष्ट कर रहा हो, परन्तु सब ठीक है क्योंकि मैं एक देश विशेष से सम्बन्धित हूँ इसलिए यही सर्वोत्तम है। हम अपने देश की आलोचना कभी नहीं कर सकते और न ही देशवासियों की। और ये चीज़ दिनोंदिन सूक्ष्म होती जाती है। परन्तु बुद्धि पक्षा तो बहुत ही खराब है। बुद्धि से यदि एक बार आपने समझ लिया कि फलां चीज़ ठीक है तो इस विषय में आपको कोई भी समझा नहीं सकता क्योंकि इसे आपने अपने मस्तिष्क के माध्यम से समझा है। ये अत्यन्त आश्चर्य की बात है। मैं रविन्द्रनाथ द्वारा रचित पुस्तक पढ़ रही थी, किसी अंग्रेज ने इसकी बहुत सुन्दर प्रस्तावना लिखी थी, परिचय लिखा था। उसने कहा था कि पश्चिम में सृजनात्मकता की हत्या कर दी गई है। तो उसने एक भारतीय आलोचक से पूछा कि क्या आप अपने कवियों की आलोचना नहीं करते हैं। क्या आपके यहाँ आलोचक नहीं हैं? "हाँ, हाँ हमारे यहाँ आलोचक हैं जो आलोचना करते हैं।" वो क्या आलोचना करते हैं? "वो इस बात की आलोचना करते हैं कि इस बार हमारे यहाँ बारिश नहीं हुई जिसके कारण बहुत सी समस्याएँ उत्पन्न हो गई। वो कहने लगा, "नहीं, नहीं, नहीं हम कवियों की बात कर रहे हैं, क्या वे कवियों की आलोचना करते हैं, क्या वे कलाकारों की आलोचना करते हैं?" वह व्यक्ति बोला, "क्या ये सब चीज़ें आलोचना के लिए हैं? इनका तो सृजन किया गया है! सृष्टा ने जो भी महसूस किया उसका उसने सृजन किया। परन्तु यदि उसने कोई अभद्र चीज़ लिखी है तो निश्चित रूप से वह हमें पसन्द नहीं आती। यदि किसी चीज़ का स्वच्छ मस्तिष्क से सृजन किया गया हो तो आप उसकी आलोचना नहीं करते?" उसने उत्तर दिया, "नहीं, क्योंकि हम इतना अच्छा सृजन नहीं कर सकते तो हमें आलोचना करने का क्या अधिकार है?" अत्यन्त बुद्धिमत्ता पूर्वक अपनी बुद्धि से हमने ये सब किया है, सभी चीज़ के लिए हमारे यहाँ नियम संहिता है, कला के लिए और सभी प्रकार के सृजन के लिए।

हमें ये कालीन पसन्द नहीं है, क्यों? क्योंकि ये हमारी मानसिक सूझ–बूझ को अच्छा नहीं लगता, ये नियम संहिता के अनुकूल नहीं है और उसके ढाँचे में ये पूरा नहीं बैठता। इसलिए ये हमें पसन्द नहीं है। क्या आप इस प्रकार का एक इंच भी बना सकते हैं? ये अहं व्यक्ति को अनाधिकार सक्रियता देता है। ये अनाधिकार है – अनाधिकार चेष्टा।

आलोचना करने का आपको कोई अधिकार नहीं। आप कुछ भी नहीं कर सकते तो आपको आलोचना करने का क्या अधिकार है? बेहतर होगा कि चीज़ों की सराहना करें और स्वयं इस बात को समझें कि आलोचना करने का अधिकार आपको नहीं है। इसकी योग्यता आपमें नहीं है। जब आपमें इसकी योग्यता ही नहीं है तो आपको आलोचना क्यों करनी चाहिए। आपको ये बात भी समझ लेनी चाहिए कि आप अहं के दास हैं। आपका अहं एवं मस्तिष्क आपको जो भी कुछ करने के लिए कहता है आप करते हैं। ये तथाकथित बुद्धि आपको एक बिन्दू तक ले आती है। एक विशेष नियम तक और तब आपका ये अहं एक जातिविशेष, देश विशेष या विचारधारा विशेष का सामूहिक अहं बन जाता है। ऐसा सामूहिक रूप से होता है और तब लोग कहते हैं ये कोई कला नहीं है। और यही कारण है कि आज कला–विशारद लोग नहीं निकल रहे। आज हम रैमब्रैन्ट पैदा नहीं कर पा रहे हैं। ऐसा हम नहीं कर सकते। यद्यपि रैमब्रैन्ट को भी अपने जीवन में बहुत से कष्ट उठाने पड़े होंगे। आप जानते हैं किस–किस ने कष्ट उठाए, इन सभी कलाकारों ने बहुत कष्ट उठाए। यहाँ तक कि माइकल एंजेलो को भी कष्ट उठाने पड़े। केवल धन की कमी के कारण ही नहीं। वैसे भी उन्हें बहुत कष्ट उठाने पड़े। आलोचना, आलोचना, आलोचना। मैं सोचती हूँ कि अब लोगों ने ये आलेचना छोड़ दी है। मैं एक कलाकार से मिली जिसने बहुत सा कला कार्य किया है। मैंने उससे कहा, "आप मुझे अपनी कलाकृतियाँ दिखाते क्यों नहीं। उसने उत्तर दिया, "नहीं, मैं ये सब दिखाना नहीं चाहता, ये सब मैंने अपने लिए बनाया है। मैंने कहा, "मैं ये कलाकृतियाँ देखना चाहूँगी, मैंने इनको देखा, सभी कृतियाँ बहुत सुन्दर थीं! तब उसने कहा कि वह अपनी कलाकृतियों का प्रदर्शन क्यों नहीं करता। कहने लगा, "लोग केवल उनकी आलोचना करेंगे।" ये सारा सृजन मैंने अपनी खुशी के लिए किया है। लोग मेरे सृजन का सारा आनन्द नष्ट कर देंगे। तो यह एक मूल चीज़ है जो हमें नहीं करनी चाहिए।

अच्छा होगा कि अपनी आलोचना करें, अपने भाई–बहनों की आलोचना करें, अपने देश की आलोचना करें, अपनी सभी आदतों की आलोचना करें, और स्वयं पर हँसें। आप यदि स्वयं पर हँसना जानते हैं तो आप किसी पर एतराज़ नहीं करेंगे, न ही किसी अन्य की सृजनात्मकता के मार्ग में

बाधा बनेंगे। तो अहं के कारण आप अधिकार विहीन हो जाते हैं। किसी भी चीज़ की आप आलोचना कर सकते हैं। आप सोचते हैं कि ऐसा करने का आपको अधिकार है। व्यक्ति को स्वयं से पूछना चाहिए कि किसने मुझे ऐसा करने का अधिकार दिया? कैसे मैं किसी की आलोचना कर सकता हूँ? निःसन्देह अब आप लोग सन्त हैं, आप इस बात को जान जाते हैं कि कौन पकड़े हुए हैं, किसकी चैतन्य लहरियाँ खराब हैं और किसके साथ समस्या है। यह सब आप जान लेंगे। ये बन्धन नहीं हैं। आप ऐसा अपने अहं के कारण नहीं करते। इन सब चीज़ों को तो आप अपनी अंगुलियों के सिरों पर महसूस कर रहे हैं। वास्तव में यही आपके अन्दर की संवेदना है, यही बोध है जिसे आप जानते हैं। तो आपको क्या करना चाहिए? अपने प्रेम में यदि संभव हो तो आपको उस व्यक्ति को बताना चाहिए कि आपमें यह दोष है। अच्छा होगा कि सुधार कर लें। ऐसे ढंग से बताएं कि वह बात को समझ ले, ऐसा न हो कि उसकी स्थिति और भी खराब हो जाए। यदि ऐसा होता है तो आपको उससे प्रेम नहीं है। सभी को उन्नत होने का अवसर दें।

सहजयोग में बहुत से ऐसे लोग हैं जो अत्यन्त, अत्यन्त अच्छे हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु ऐसे भी कुछ लोग हैं जिनके विषय में हम कह सकते हैं कि वो बहुत कठिन हैं। उनके खोपड़े में मानो कोई दरार आदि हो! कभी-कभी इस चीज़ की बहुत कमी होती हो। मुझे लगता है कि उनके कुछ पेच ढीले हो गए हैं, कभी-कभी तो वो विदूषकों की तरह व्यवहार करते हैं। हम कुछ ऐसे लोगों को जानते हैं कि उनका कुछ नहीं हो सकता। अन्यथा वे बहुत बुद्धिमान हैं, बहुत तेज हैं, परन्तु सजहयोग में वो उस स्तर तक नहीं आ सकते जहाँ ये कहा जा सके कि उन्नति सम्भव है। कल्पना करें की पृथ्वी माँ कभी सूर्य की तरह से गर्म थी। उस स्थिति में उन्नति असम्भव थी या यदि वह चन्द्रमा की तरह से ठण्डी होती तो भी उन्नति संभव न होती। उन्नति के लिए तो इसका मध्य में आना आवश्यक था जहाँ दोनों ही गुण (सर्दी और गर्मी) उचित मात्रा में होते। इसी प्रकार मानव को भी संयम रखना चाहिए। संतुलन बनाए रखना चाहिए। और समझना चाहिए कि उसे अति की सीमा तक नहीं जाना। यह सन्तुलन आप केवल तभी सीख सकते हैं जब आप किसी से प्रेम करते हैं।

आप जानते हैं कि सहजयोग में हमें कई बार कुछ लोगों को सहजयोग छोड़ने के लिए कहना पड़ता है। ऐसा भी उनसे प्रेम के कारण होता है क्योंकि सहजयोग से बाहर किए जाने पर वो सुधरते हैं। मैंने देखा है कि ये लोग बहुत तेजी से सुधरते हैं। परन्तु सहजयोग समाज के अन्दर रहते हुए वे अत्यन्त उपद्रवी बन जाते हैं और इस उपद्रव को सामूहिक बनाने का प्रयत्न

करते हैं क्योंकि उनका अहं कार्य करता है या हो सकता है उनके बन्धन कार्य करते हैं। जो भी हो, वे उपद्रव करना चाहते हैं। अतः हमें उनसे कहना पड़ता है कि कृपा करके अब कुछ समय के लिए बाहर हो जाओ। उस व्यक्ति में यदि उस उपद्रवी प्रवृत्ति को समाप्त करना है तो उसका निष्कपट होना आवश्यक है। वह उपद्रवी नहीं हो सकता और तर्क दृष्टि से भी यदि ये देखें कि किसी व्यक्ति को यदि इस प्रकार से समझाया जाए तो उसे भी अच्छा लगेगा कि उसे बाहर जाने के लिए कहने का क्या कारण है? परन्तु इस चीज़ को अत्यन्त ही वीभत्स रूप से कष्टकर माना जाता है। इस बात को मैं जानती हूँ। परन्तु आपको पूर्ण धैर्य एवं सूझ–बूझ दर्शानी होगी। एक प्रेम से ओत प्रोत व्यक्ति की तरह से लोगों से बातचीत करनी होगी। प्रेम में इतनी शक्ति है कि कोई भी ऐसा कार्य नहीं करेगा जिससे ये अहसास हो कि वे प्रेम नहीं करते। प्रेम अत्यन्त शक्तिशाली है। यह लोगों को इतनी सुन्दरता पूर्वक बाँधता है कि हर व्यक्ति कुछ न कुछ करना चाहता है। उदाहरण के रूप में आप मुझे पुष्पार्पण करना चाहते हैं क्योंकि आप जानते हैं फूलों से मुझे प्रेम है। अतः ये दर्शाने के लिए कि श्रीमाताजी "हम आपसे प्रेम करते हैं," आप मुझे पुष्पार्पण करते हैं मैं जानती हूँ कि आप मुझे प्रेम करते हैं। परन्तु इस प्रेम को आप सुदृढ़ करना चाहते हैं। मेरे अन्दर अपने प्रेम को आप दृढ़ करना चाहते हैं इसलिए मेरे प्रति अपना प्रेम करने के लिए, मेरे प्रति अपने हृदय की भावनाओं को प्रकट करने के लिए आप मुझे पुष्प अर्पित करते हैं। प्रेम की ये भावनाएं इतनी आसानी से अभिव्यक्त हो सकती हैं कि दूसरा व्यक्ति ये जान जाता है कि प्रेम क्या है?

प्रेम ही सहस्रार की पूर्ण शक्ति है। आप यदि ये बात देख सकें कि मस्तिष्क को तो संदेह करना ही है। मस्तिष्क को संदेह करना ही है। अपने मस्तिष्क एवं बुद्धि के माध्यम से सहजयोग की शक्तियों का सत्यापन करने के पश्चात् आप एक ऐसे बिन्दू तक पहुँचते हैं जहाँ आप समझ जाते हैं कि विश्लेषण और संश्लेषण (Analysing and Synthesizing) करने का कोई लाभ नहीं है। ये सब बेकार हैं। प्रेम ही महत्वपूर्ण है, सहजप्रेम। अतः आत्मसाक्षात्कार से पूर्व जिस मस्तिष्क का प्रयोग विश्लेषण व आलोचना के लिए होता था, सभी मूर्खतापूर्ण कार्यों के लिए होता था, अब वह प्रेम करना चाहता है। इसकी पराकाष्ठा है जिस बिन्दु पर मस्तिष्क केवल प्रेम के अतिरिक्त कुछ भी न करें उस स्थिति तक व्यक्ति को पहुँचना है। तब व्यक्ति केवल प्रेम करता है, केवल प्रेम को जानता है क्योंकि इसने प्रेम की शक्ति को पहचान लिया है। आप तर्कसंगत परिणाम तक पहुँच जाते हैं और आदिशंकराचार्य की तरह से आपको भी सत्य दिखाई देता है, जो उन्होंने 'विवेक चूड़ामणि' तथा अन्य

ग्रन्थों में लिखा। इस सत्य को उन्होंने प्रकट किया। उन्होंने केवल 'माँ' (आदिशक्ति) का स्तुतिगान किया, समाप्त। एक बार जब आप उस स्तर पर पहुँच जाते हैं तब आप कह सकते हैं आप निर्विकल्प हैं क्योंकि अब कोई विकल्प रह ही नहीं गया। अब आपके मस्तिष्क में कोई सन्देह रहा ही नहीं क्योंकि आप प्रेम करते हैं और प्रेम में सन्देह का कोई स्थान नहीं है, कोई प्रश्न ही नहीं है। ये सब चीज़ें तो तभी होती हैं जब आप सन्देह करते हैं। जब आप प्रेम करते हैं तो सन्देह नहीं करते, तब आप मात्र प्रेम करते हैं। क्योंकि प्रेम का आप आनन्द लेते हैं इसीलिए प्रेम आनन्द है और आनन्द प्रेम है।

बहुत समय के पश्चात् सहस्रार खोला गया है। हमें अपनी ध्यान धारणा के माध्यम से, अपनी सूझ–बूझ से, स्वयं तथा अन्य लोगों को समझकर सहस्रार को पुनः खोलना है। तार्किकता द्वारा इस बिन्दु तक पहुँचने की अब कोई संभावना नहीं रह गई है। हम इसके अंत तक पहुँच चुके हैं, प्रेम के सागर में कूद पड़े हैं। समाप्त। एक बार जब आप प्रेम के सागर में कूद पड़ेंगे तो कुछ भी करने को न रह जाएगा। उसकी हर लहर का आनन्द लिया जाना चाहिए। इसके हर रंग का आनन्द लिया जाना चाहिए, इसके हर स्पर्श का आनन्द लिया जाना चाहिए। तर्क–संगति द्वारा व्यक्ति को केवल यही सीखना है कि सहजयोग प्रेम के अतिरिक्त कुछ भी नहीं

परमात्मा आपको धन्य करें

श्री हनुमान पूजा

मई, 1989

(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन)

आज अत्यन्त आनन्द का दिवस है। लगता है पूरा वातावरण ही इस आनन्द से उल्लसित है मानो सारे देवदूत संगीत गा रहे हों, विशेष रूप से श्री हनुमान जी। श्री हनुमान भी देवदूत हैं। देवदूतों का जन्म विशेष रूप से होता है क्योंकि वे देवदूत हैं मानव नहीं। जन्म से ही वे दिव्य गुण सम्पन्न होते हैं। अब आप सब लोग भी मानव से देवदूत बन गए हैं। यह सहजयोग की बहुत बड़ी उपलब्धि है। देवदूतों के जन्मजात दिव्य गुण उनके शैशव काल में ही दिखाई देने लगते हैं।

सर्वप्रथम तो वे असत्य के सम्मुख घबराते नहीं उन्हें इस बात की चिन्ता नहीं होती कि उनके विषय में लोग क्या कहेंगे और जीवन में उन्हें क्या हानि होगी। सत्य ही उनका जीवन होता है। सत्य ही उनकी प्राण वायु है। किसी अन्य चीज़ का उनके लिए कोई महत्व नहीं होता। देवदूत का यह प्रथम महान गुण है। सत्य को स्थापित करने के लिए, उसकी रक्षा करने के लिए और सत्य पर चलने वाले लोगों की सुरक्षा के लिए वे किसी भी सीमा तक जा सकते हैं। देवदूत संख्या में बहुत हैं और सर्वत्र फैले हुए हैं। हमारे बाईं ओर गण है और दाईं और देवदूत। संस्कृत भाषा के इस शब्द देवदूत का अर्थ है परमात्मा के राजदूत। आप लोग भी वही हैं आप सब देवदूत हैं। फ़र्क सिर्फ़ इतना है कि आप लोग इस सत्य को नहीं जानते जबकि उन्हें बचपन से ही इस बात का ज्ञान था। जब आपको इस बात का ज्ञान हो जाएगा कि आप देवदूत हैं तब आपके दिव्य गुण आपमें चमक उठेंगे और आप हैरान होंगे कि किसी भी कीमत पर सत्य पर डटे रहने का गुण अत्यन्त सुगमतापूर्वक कायम रखा जा सकता है। इसके लिए आपको अधिकार दिया गया है, विशेष आशीर्वाद दिए गए हैं और **परमात्मा की ओर से आपको विशेष सुरक्षा प्रदान की गई है कि यदि आप सत्य पर डटे रहेंगे, धर्म परायणता पर डटे रहेंगे, धर्म पर खड़े रहेंगे तो आपको सभी प्रकार की सुरक्षा दी जाएगी।** देवदूतों को इस बात का ज्ञान होता है, इस बात के प्रति वे विश्वस्त होते हैं, इस बारे में उन्हें कोई संदेह नहीं होता, वे पूर्णतः विश्वस्त होते हैं। परन्तु आप लोग नहीं हैं। अब भी कई बार आप सोचते हैं कि हो सकता है और नहीं भी हो सकता और यही शैली चलती रहती है। **मुझ पर विश्वास करें कि आप देवदूत हैं आपमें सारी शक्तियाँ हैं। आपके पास वो**

अधिकार हैं जो मानव के पास नहीं होते। ये विशेषताएं देवदूतों की हैं सन्तों में ये नहीं होती। सन्तों के साथ चालबाज़ी की जा सकती है, उन्हें सताया जा सकता है। अवतरणों के साथ भी ये सब हो सकता है। अवतरण इन सब चीज़ों को स्वीकार करते हैं वो चाहते हैं कि वो ये सभी तपस्याएं कर लें ताकि अपने जीवन काल में ही वो कुछ ऐसा घटित कर सकें जिसके द्वारा अधिक जोर-शोर से उनकी अभिव्यक्ति हो। यदि रावण न होता तो रामायण न होती और यदि कंस न होता तो श्री कृष्ण न होते। अतः अवतरण समस्याओं को अपने ऊपर ले लेते हैं और असुरों से युद्ध भी कर सकते हैं। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि वे कष्ट उठाते हैं परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है।

देवदूतों की एक विशेष श्रेणी है। वे स्वयं पर समस्याओं को लिए बिना ही उनका समाधान कर देते हैं। सन्तों और अवतरणों के सम्मुख यदि कोई समस्या हो तो देवदूत इसका समाधान कर लेते हैं। कई बार उन्हें कहना पड़ता है कि अभी आप इस मामले में मत कूदो। हम मंच पर कार्य कर रहे हैं। जब आपको कहेंगे तभी आप इसमें आना। बाहर दरवाजे पर पूरी तैयारी की स्थिति में वे खड़े रहते हैं। कार्य करने के लिए आतुर। वो निश्चित संख्या में होते हैं और आप उन पर पूरी तरह से निर्भर कर सकते हैं। उदाहरण के रूप में श्री हनुमान जी, जिन्हें आप देवदूत के रूप में जानते हैं, में महान शक्तियाँ हैं, उनमें महान सामर्थ्य है। उन शक्तियों का उपयोग करने का उन्हें पूर्ण अधिकार है। अपनी शक्तियों के प्रति वे पूर्णतः सजग हैं। अत्यन्त विनोदशीलता पूर्वक वे सभी कार्य करते हैं। और अपनी शक्तियों का उपयोग करते हैं। जैसे उन्होंने पूरी लंका को जला दिया और अपने इस कृत्य पर हँसते रहे। फिर उन्होंने अपनी पूँछ को लंबा करके बहुत से राक्षसों की गर्दनें लपेट लीं। वे उनसे खिलवाड़ कर रहे थे। राक्षसों को पूँछ में बाँधकर वे हवा में उड़ जाते और राक्षस हवा में झूल रहे होते। यह देवदूतों की विनोदशीलता है क्योंकि वे अत्यन्त आत्मविश्वस्त होते हैं, पूर्ण चेतन होते हैं और अपने व्यक्तित्व से, अपनी शक्तियों से और अपने आपसे पूर्णतः एक-रूप होते हैं।

यहाँ पर सहजयोगी कई बार तो समझते ही नहीं कि मैंने तुम्हें देवदूत बना दिया है! मैंने आपको सन्त नहीं बनाया, देवदूत बनाया है। आपकी हमेशा रक्षा की जाती है। मैं केवल देवदूत ही बना सकती हूँ सन्त नहीं। सन्त तो अपने प्रयत्नों से बनते हैं। श्री गणेश, कार्तिकेय और श्री हनुमान तो बिना किसी प्रयास के बने हैं। आप लोगों को भी इसी प्रकार इसी शैली में बनाया गया है। समझने का प्रयत्न करें कि आपके बारे में मैं जो कहती हूँ वह सत्य है। भिन्न प्रकार के बन्धन आपके माध्यम से कार्य करते हैं। यद्यपि आप सन्त हैं फिर भी आप ये नहीं जानते कि किस प्रकार अपने

पंख फैलाने हैं। फिर भी कई बार मैं महसूस करती हूँ कि पुनर्जन्म हो चुका है और ये सब देवदूत बन गए हैं, इनके पंख हैं परन्तु छोटे पक्षी होने के कारण इन्हें अभी उड़ना सीखना है। सहजयोग में जो अनुभव आपको प्राप्त हुआ उससे आपको आत्मविश्वास प्राप्त होता है। कल जैसे आप लोग गा रहे थे। चमत्कार प्रतिदिन, चमत्कार चहुं ओर (Miracles Every Day, Miracle Around You) ये चमत्कार देवदूत करते हैं और इस प्रकार आपको विश्वास कराने का प्रयत्न करते हैं कि आप भी हममें से एक हैं, केवल हमारे साथी बन जाएं।

जब यहाँ पर बहुत से देवदूत बैठे हुए हैं तो क्यों न हम इस विश्व को परिवर्तित करने के विषय में सोचें। आप लोगों में देवदूतों से भी बढ़कर एक गुण है, देवदूत किसी की कुण्डलिनी नहीं उठा सकते। वे ये कार्य नहीं कर सकते। उन्हें इस बात की चिन्ता भी नहीं है। वो तो केवल वध करने के लिए, जलाने के लिए, दबाने के लिए तथा आस–पास उपस्थित सभी दुष्टों को हटाने के लिए यहाँ हैं। वो किसी को परिवर्तित नहीं कर सकते। अतः परमात्मा के साम्राज्य में आपका अधिकार उनसे भी बढ़कर है। आप लोगों की कुण्डलिनी उठा सकते हैं और उन्हें आत्मसाक्षात्कार दे सकते हैं परन्तु मानव के बन्धन अभी भी बने हुए हैं। उदाहरण के रूप में उस दिन मैंने एक अंगूठी पहनी हुई थी। मेरी बेटी ने मुझे छेड़ना शुरु कर दिया कि अब आप हर समय लोगों को यही अंगुली दिखाएं ताकि वे आपकी अंगूठी देख सकें। अतः सांसारिक जीवन में जो कुछ भी संपदा या शक्तियाँ हमारे पास होती हैं, उदाहरण के रूप में कोई व्यक्ति यदि उच्च पद पर है तो इस बात को आप तुरन्त उसकी नाक या होंठों से जान सकते हैं, जिस प्रकार वह नाक चढ़ाता है, मुँह बिचकाता है। परन्तु आपको जो शक्तियाँ प्राप्त हैं जो वैभव प्राप्त है उनकी अभिव्यक्ति करने में उनके विषय में बातचीत करने में उनका उपयोग करने में आप लोग घबराते हैं। आप कल्पना करें कि इतने सारे देवदूतों के होते हुए पूरा इंग्लैण्ड पल भर में आत्मसाक्षात्कार पा लेगा, परन्तु हम अब भी ये जानने का प्रयत्न कर रहे हैं कि हम क्या हैं? श्री हनुमान जी को कोई समस्या न थी क्योंकि अपने शैशव काल से ही वे जानते थे कि वे देवदूत हैं और उन्हें देवदूत का कार्य करना है। परन्तु हमारा जन्म मानव की तरह से हुआ है और अब हम देवदूत बने हैं। अन्य देवदूतों की तरह से गतिशील होना हमें कठिन प्रतीत होता है। आपके तो विचार, सामूहिक विचार, यहाँ तक कि आपके व्यक्तिगत विचार भी शक्तिशाली हैं। आपका चित्त भी शक्तिशाली है। हो सकता है कि भय के कारण या अपने पूर्व बन्धनों के कारण या अपने अहं के कारण, जो कि अभी तक आपसे चिपका हुआ है, अब भी आप गलत चीज़ों में फँसे हुए हैं और आपकी शक्ति और गतिशीलता

अभिव्यक्त नहीं हो रही।

हम बहुत सी चीज़ों को दोष दे सकते हैं, जैसे किसी देश पर अकर्मण्यता, किसी पर अहं का दोष दे सकते हैं। परन्तु अब आपका कोई भी देश नहीं रहा। अब आप लोग परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर गए हैं। आप एक ऐसे देश में हैं जिसकी कोई परिसीमा नहीं। ये सारे बन्धन जो अभी तक आप में चिपके हुए हैं इनका आप पर कोई प्रभाव नहीं होना चाहिए। न ही इन्हें आपको परेशान कर सकना चाहिए और न ही अपना कार्य करने में इन्हें आपके सम्मुख बाधा बनकर खड़ा होना चाहिए। आप कल्पना करें कि किस प्रकार गैब्रिल के रूप में श्री हनुमान जी मारिया के पास बताने के लिए गए कि एक बच्चा, जो कि अवतरण है, विश्वरक्षक (Saviour) है, वह तुम्हारी कोख से जन्म लेगा। वह कुँवारी युवती थी। उस समय के बन्धनों से परिपूर्ण समाज में एक कुँवारी लड़की को यह समाचार बताना बहुत ही भयावह कार्य था परन्तु उन्होंने इस को किया क्योंकि मुझे ये कार्य करना है तो इसे मैं करूँगा। ये यदि आदेश है तो मैं ये कार्य करूँगा क्योंकि वे जानते थे कि आदेश का पालन करना उनका स्वभाव है यह उनकी अन्तर्प्रवृत्ति है। इस पर वे कोई सन्देह नहीं करेंगे न ही इसका नाप तोल करेंगे। एक बार उन्हें यदि ये कह दिया गया तो वे इसे पूरा करेंगे।

अतः हमारे अन्दर एक विशेष सूझ-बूझ होनी चाहिए कि हम अपने अन्दर से उन्नत हो रहे हैं। परन्तु यदि हम अपनी अभिव्यक्ति नहीं करते, अपने गुणों का प्रदर्शन नहीं करते, अपने जीवन में, अपने कार्यों में, अपने उद्देश्य में और जीवन के लक्ष्य में इनका उपयोग नहीं करते तो न तो सहजयोग फैलेगा और न ही आपकी सहायता करेगा। जिस प्रकार का कार्य आपने करना है उसमें कोई समस्या नहीं है। मेरे सम्मुख समस्याएँ हैं, आपके सम्मुख नहीं हैं। आपको समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। किसी से भी जाकर आप जैसे चाहें बात करें। उन्हें खुशी-खुशी आपको सुनना होगा और यदि वो आपको नहीं भी सुनेंगे तो भी वो आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकते आपको कोई हानि नहीं पहुँचा सकते। आपको ये बहुत बड़ी सुरक्षा प्राप्त है, आपके कार्य में वो बाधा नहीं डाल सकते। सहजयोग में आने का ये अभिप्राय नहीं है कि हमें क्या लाभ हुए, हमें क्या प्राप्त हुआ? उन लोगों को देखें जो आपको ये कहते हैं कि आपने सहजयोग के लिए इतना कुछ किया परन्तु इसने आपको क्या प्रदान किया? इसने आपको आत्मसाक्षात्कार दिया, इसने आपको देवदूत का पद प्रदान किया। कहने से मेरा अभिप्राय है कि आप कोई अन्य कार्य करके देखें क्या उससे आपको देवदूत का पद प्राप्त हो सकता है? किसी और कार्य से आपको ये पद प्राप्त नहीं हो सकता, यह पद तो सहजयोग ने आपको दिया है। अब आपको और क्या चाहिए? इससे पूर्व

ऐसा होना कभी संभव न था मुझ पर विश्वास करें। यह असंभव स्थिति है किसी भी प्रकार से यदि ये पद प्राप्त करना संभव होता तो ज्ञानेश्वर जी को इतनी छोटी आयु में समाधि न लेनी पड़ती और न ही कबीर साहब को ये कहना पड़ता, "हे परमात्मा कैसे समझाऊँ सब जग अन्धा।" तो आपके अन्दर वो सूक्ष्म शक्ति है जिसके द्वारा बिना किसी को बताए आप उसकी कुण्डलिनी पर कार्य कर सकते हैं। परन्तु ध्यान में जब आप बैठते हैं तो अपने हृदय में इस बात को स्वीकार करें कि मैं देवदूत हूँ और देवदूत होने के नाते, मेरे अन्दर परमात्मा के अलावा किसी से भी मोह नहीं है।

मोह बहुत सी किस्मों के हैं फिर भी मैंने देखा है कि सहजयोग में लोगों के मोह ऐसे हैं कि यदि विवाह हो गया तो उन्हें अपनी पत्नियों से मोह हो जाएगा। पत्नियों के मोह के कारण बहुत से सहजयोगियों का पतन हो गया। बच्चों से मोह के कारण भी बहुत से लोग सहजयोग से चले जाऐंगे। कल जैसे मैंने आपको बताया था कि पूरे संसार के सहजयोगी बच्चे आप ही के बच्चे हैं, आप ही उनके माता–पिता हैं आपका बच्चा सोया हुआ है, यदि आप केवल उसे ही ढकते हैं तो ठीक नहीं है आपको चाहिए कि सभी बच्चों को ढकें। जो भी बच्चे सोए हुए हैं सभी की आपने देखभाल करनी है। कल्पना कीजिए कि यदि हनुमान जी वहाँ होते तो क्या वे केवल एक ही बच्चे को ढकते? नहीं, वो तो ब्रह्माण्डीय अस्तित्व हैं। अतः हर बच्चे के साथ आपने वैसे ही प्रेम करना है, उसकी वैसे ही देखभाल करनी है जेसे आप अपने बच्चों की करते हैं। इसके अतिरिक्त और भी लिप्साएं होती हैं जैसे स्वामित्व, पदवी तथा नौकरी आदि का मोह। मेरे पास इस बात का ज्ञान नहीं है कि अन्य लोगों के पास क्या है। मैं तो जब आप लोगों को प्रेम से स्टेशन पर आते हुए देखती हूँ तो सागर की तरह से मेरा हृदय उमड़ पड़ता है और लहरों की तरह से उछलता है। जब आपको छोड़कर मुझे जाना होता है तो समुद्र की लहरों की तरह से एक बार फिर ये पीछे को हट जाता है। ये वैसे ही है जैसे चन्द्रमा के सौन्दर्य को देखकर सागर उमड़ता है, चन्द्रमा के आनन्द में, उसके प्रेम में। तब मैं प्रेम को देखती हूँ – वो प्रेम जो आपको पक्षी के घोंसले में दिखाई देता है जहाँ वह अपने नन्हें बच्चों की चोंच में चोंच डालकर खाना खिलाता है। यह प्रेम सागर की तरह से है। यही प्रेम आप आकाश में देखते हैं और यही अपने हृदय में देखते हैं और इसकी व्याख्या आनन्द के विशाल सागर के रूप में कर सकते हैं जो आपके अन्दर से बह रहा है।

परन्तु लिप्साएं उस आनन्द के सागर का आनन्द लेने की क्षमता आपको नहीं देतीं। आप यदि तट पर खड़े रहेंगे तो सागर का आनन्द किस प्रकार लेंगे? आपको

समुद्र में कूदना होगा परन्तु आपने तो अपने लंगर अन्य चीज़ों में डाले हुए हैं इसलिए आप सागर में कूद ही नहीं सकते। आप जानते हैं कि आप कितने सुरक्षित हैं आपको तैरना भी आता है और आप शार्क रूपी बाधाओं को भी समाप्त करना जानते हैं। आपका एकमात्र कटाक्ष आपके इस कार्य के लिए काफी है। परन्तु क्योंकि आप अपनी शक्ति के प्रति चेतन नहीं हैं इसलिए ये गतिशील नहीं है। निश्चित रूप से यही मामला है। मैंने देखा है कि लोगों को जीवन में छोटा सा पद मिल जाता है तो वो उसकी भी शेखी मारने लगते हैं–मैं फलां आदमी से मिला, मैं उस व्यक्ति से मिला और, ऐसा–ऐसा हुआ। ऐसे व्यक्ति पर आपका जी हँसने को करता है। परन्तु आपको सहजयोग प्राप्त हुआ है जिसके द्वारा आप उन्नत हुए हैं आपका पोषण हुआ है और आप महान बन गए हैं।

इन चीज़ों में व्यक्ति को श्री हनुमान के पदचिन्हों पर चलना चाहिए। उन्होंने सोचा कि सूर्य बहुत अहंकारी है, कभी–कभी तो ये लोगों को जलाने का प्रयत्न करता है, इसकी गर्मी इतनी अधिक होती है। सूर्य की पूजा करने वाले लोग भी अहंकारी होते हैं। उनमें इतना अहंकार होता है कि यदि आप उनकी भाषा और उनके रीति–रिवाज के अनुसार एक भी गलत शब्द कहें तो आपने छुरी गलत हाथों में दे दी। सब समाप्त। आप संसार के सबसे निकृष्ट व्यक्ति बन गए, आपने बहुत बड़ा अपराध कर दिया! ये सब मूर्खतापूर्ण विचार किसी विकृत अहंकारी से ही आ सकते हैं। अहंकार इतना भ्रष्ट है। जब आपको अपना कोई अन्त दिखाई नहीं देता, सोचते हैं कि मैं ही सब कुछ हूँ मैं सब कुछ जानता हूँ यह रीति–रिवाज सर्वोत्तम है या यह कालीन सबसे अच्छा है, मैं, मैं, मैं। परन्तु आप हैं कौन? आपसे किसने कहा कि आप इसे पसन्द करें या न करें। आप कहे चले जाते हैं कि मुझे ये पसन्द नहीं है मुझे वो पसन्द नहीं है।

दूसरी ओर अहंकारी व्यक्ति सदैव दास बनता चला जाता है। मैं कहूँगी कि कुछ देशों में जाकर मैंने देखा कि वो विशेष प्रकार के नियमों पर चल रहे हैं। ये नियम उनके अहं की देन हैं और कलाकार लोग इनके अनुरूप चलते हैं। उदाहरण के रूप में कोई कलाकार आनन्द के लिए कोई कृति बनाता है परन्तु सभी लोग उसकी आलोचना करेंगे और ये आलोचना ऐसी होती है 'मुझे ये पसन्द नहीं है यह रंग अच्छा नहीं है, वह रंग अच्छा नहीं है और पेशावर लोग ऐसा करते हैं!' उन्हें पैंसिल से एक रेखा भी खींचनी नहीं आती, ठीक से वे एक रेखा भी नहीं खींच सकते हैं, चित्रकारी की तो बात ही क्या है! परन्तु तुरन्त ये कह उठेंगे कि मैं सोचता हूँ ऐसा–ऐसा होना चाहिए। इन शोधों तथा सिद्धान्तो की उन्होंने पुस्तकें लिख ली हैं। कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि कला का सम्बन्ध आपके हृदय से है, मस्तिष्क से

नहीं। ऐसा करके आपने बहुत से कलाकारों की हत्या कर दी है और सभी चित्रकारों को ये सोचना पड़ता है कि इसके विषय में लोग क्या कहेंगे। परिणामस्वरूप हास्यास्पद चीज़े पनपती हैं जिनमें सूक्ष्म अभिव्यक्ति नहीं होती। ये बात समझी जानी चाहिए। हमारा अहं इसका कारण है जिसने हमारे विचारों की सभी अच्छी एवं स्वाभाविक जीवंत उन्नति को दबा दिया है। ये उन्नति चाहे कला के क्षेत्र में हो या हमारे जीवन में हो। मेरे विचार से ये सारे संदूषण (Contamination) या पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं में सबसे बुरी समस्या है। मानव मस्तिष्क ने इन दम घोटू क्षेत्रों का सृजन किया है जहाँ कोई भी अपनी अभिव्यक्ति नहीं कर सकता और जहाँ पर अहंकारी लोगों का प्रभुत्व है। ये पुस्तक फलां व्यक्ति द्वारा लिखी गई है। उस व्यक्ति से यदि आप मिलें तो आपकी इच्छा करती है कि समुद्र में कूद पड़ें। तो लिखी हुई सारी चीज़ें बाइबल नहीं होती और जो इनके लेखक हैं उनसे आप बिना डंडा लिए मिल नहीं सकते। अतः वस्त्रों में, बच्चों के साथ सम्बन्धों में, अध्यापक के साथ या किसी अन्य के साथ सम्बन्धों में जो भी अभिव्यक्ति होती है वह इन नियमों के अनुरूप होनी चाहिए। बार–बार आपको कहना होगा 'धन्यवाद', 'मुझे खेद है।' अतः हमें इतना अधिक बनावटी अभिव्यक्तियों में धकेल दिया गया है कि मुझे विश्वास है कि कुछ समय पश्चात् कला का सृजन होगा ही नहीं। उल्लास का पूर्ण अभाव है। वे लोग आनन्दित हो ही नहीं सकते, इससे उन्हें भय आता है। मैं नहीं जानती कि आपने इस ओर ध्यान दिया है या नहीं परन्तु जो लोग अज़ायबघर देखने जाते हैं या प्रदर्शनियाँ देखने जाते हैं वे सोचते है कि वे कोई दिव्य व्यक्ति हैं और अपनी आज्ञा के माध्यम से वे हर चीज़ का आँकलन कर सकते हैं। हनुमान जी ने इसी चीज़ को पूरी तरह खा डालना चाहा था। आज्ञा की सुई जो बाएं–दाएं जाती रहती है और जो आपको अपने अहं की मूर्खतापूर्ण अभिव्यक्ति करने को विवश करती है इसे सभी ने नियंत्रित करने का प्रयत्न किया और खा डालने का प्रयत्न किया वैसे ही जैसे शायद मैं भूतों को खाती हूँ हनुमान जी इस सूर्य को खा रहे थे।

परन्तु देवदूत के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि उसमें अहंकार नहीं होना चाहिए। कुछ सहजयोगी कहते हैं कि श्रीमाताजी मैं सहजयोग का बहुत अधिक कार्य नहीं करना चाहता क्योंकि इससे मेरा अहं बढ़ जाएगा। मैं नहीं चाहता कि मेरा अहं बढ़ जाए। परन्तु आप अपने अहं को नष्ट क्यों करना चाहते हैं, किसलिए? सहज कार्यों के लिए न! कितनी दोष पूर्ण स्थिति है कि हम कहते हैं कि हम स्वयं को पीछे रखना चाहते हैं कि कहीं हमारा अहं न बढ़ जाए! आप केवल अपने बारे में सोच रहे हैं तो सहजयोग का क्या होगा। अतः आजकल नज़रिया ये है कि बचकर चलना ही बेहतर

है क्योंकि सहजयोग में कुछ अत्यन्त अहंकारी, आक्रामक तथा दिखावा करने वाले लोग थे जिन्हें पतन के गर्त मे जाना पड़ा। तो अब मुझे लगता है कि सहजयोग में एक अन्य नज़रिया आरम्भ हो गया है कि बचकर रहना ही अच्छा है। इन दोनों नज़रियों के बीच सहजयोग खो जाएगा। यदि आप जानते हैं कि आप देवदूत हैं तो आप में अहंकार न होगा। जिसे भी इस बात का ज्ञान है वो जानता है कि कार्य करना तो स्वभाव वश है। जैसे आज मेरे पति प्रशंसा करते हुए मुझे कह रहे थे कि 'तुम्हीं ने यह सब किया है।' मैंने कहा 'नहीं, मैंने कुछ नहीं किया।' आप कैसे कह सकती हैं कि आपने यह कार्य नहीं किया? मैंने कहा कि 'यह तो उनमें अन्तर्जात है।' देखो, यदि बीज को पृथ्वी माँ में डाल दिया जाए तो यह अंकुरित हो जाता है। इसी प्रकार उनमें भी कुण्डलिनी अन्तर्जात है–यह भी प्रस्फुटित हो जाती है। तो किस प्रकार मैं इसका श्रेय ले लूं? कहने लगे क्या यह पृथ्वी माँ ने किया है? मैंने कहा नहीं उनमें अन्तर्जात पृथ्वी माँ के गुण ने यह कार्य किया है। कहने लगे, तो किसने यह सारा कार्य किया है? मैंने कहा, 'यह आदिशक्ति ने किया है। ठीक है, परन्तु आदिशक्ति ने सहजयोग नहीं बनाया है। उन्होंने सभी में उन शक्तियों का सृजन किया है जो कार्यान्वित होती हैं, परन्तु सहजयोग नहीं होता। सहजयोग उन अन्तर्जात गुणों से कार्यान्वित होता है जो पृथ्वी माँ में हैं, जो बीज में है। मैं यहाँ पर आदिशक्ति के रूप में नहीं हूँ, मैं यहाँ माँ रूप में हूँ। पावनी माँ के रूप में मैंने उनका पथ प्रदर्शन किया है। आप कह सकते हैं कि मैं पृथ्वी माँ की तरह से हूँ, जो बीज का अंकुरण करती है।

तो एक अन्य विरक्ति (Detachment) जो आप में आ सकती है कि आपके अन्दर विद्यमान शक्तियाँ कुण्डलिनी के अन्तर्जात स्वभाव के कारण ज्योतिर्मय हो उठी हैं। आप स्वयं शक्तिशाली हैं तथा मैंने तो आपको केवल इसके विषय में बताया है। शीशे में आप स्वयं देखें, मैं आपको बता रही हूँ कि आप ऐसे हैं। मैं कैसे इसका श्रेय ले सकती हूँ? अतः विरक्त होकर आप समझ सकते हैं कि हमारे अन्दर जो शक्तियाँ विद्यमान हैं, वो सहजयोग के लिए हैं, जैसे श्रीमाताजी की शक्तियाँ सहजयोग का कार्य करने के लिए हैं। हमारी शक्तियाँ सहजयोग का कार्य करने के लिए हैं। जिस प्रकार श्रीमाताजी कार्य करती हैं हमें भी करना चाहिए। परन्तु इस प्रकार के मोह हैं–**माँ ही सब कर रही हैं, हम क्या कर सकते हैं? नहीं, आपको कार्य करना है।** यह बहुत बड़ा मोहभंग है जो मैं कहने का प्रयत्न कर रही हूँ कि आपको स्वयं यह कार्य करना है। ऐसा नहीं कि 'माँ ही सब करेंगी वे ही सभी कुछ कर रही हैं। यह ठीक है, एक प्रकार से यह बात ठीक है परन्तु आप ही माध्यम हैं। विद्युत यहाँ सब कुछ कर रही है, परन्तु इस यन्त्र को

भी कार्य करना होगा। तो स्रोत के होते हुए भी परिणाम तक तो यन्त्र ही पहुँचाता है। हनुमान की तरह से आप भी माध्यम हैं, आप को कार्य करना होगा, कार्य सम्पन्न करना होगा। यह अत्यन्त गतिशील चीज़ है जो हमें प्राप्त करनी चाहिए।

हनुमान जी का एक अन्य गुण यह था कि वे अत्यन्त चुस्त थे और वे समय से परे (कालातीत) थे। सूर्य को ही यदि आप निगल लें तो समय कहाँ रह गया? वे समय से परे थे इसीलिए सभी कार्यों को वे तेजी से किया करते थे। उदाहरण के रूप में पिछले सोलह वर्षो से हम सहजयोग की एक पुस्तक तैयार कर रहे हैं। इस पर काम चल रहा है, चल रहा है! इसके अतिरिक्त हम सहजयोग में रोग मुक्त हुए लोगों के अनुभवों को रिकार्ड कर रहे हैं, वो भी चल ही रहा है! बहुत अच्छा कार्य है। और हम सहजयोग प्रचार के लिए रूस जाने की तैयारी कर रहे हैं–बस कर रहे हैं! सभी असुर वहाँ पहुँच गए हैं परन्तु देवदूत बड़ी शान्ति से तैयारी कर रहे हैं!

तो हनुमान जी का एक गुण यह था कि वे बहुत वेगशील थे। किसी अन्य के कार्य करने से पूर्व वो कार्य कर डालते थे। उनका मुकाबला न हो सकता था। युद्ध करके जीतना, नेपोलियन को पराजित करना ठीक है। परन्तु **धर्म के क्षेत्र में, सहजयोग के मैदान में, मुझे लगता है, लोग समय के महत्व को नहीं समझते। कार्य को लटकाने में हम कुशल हैं, देर करना हमारी आदत है-ठीक है, हम फोन करेंगे, मैं पता लगाऊँगा, सब हो जाएगा। यह हमारी बहुत बड़ी कमी है।** यह गुण हमें श्री हनुमान से सीखना है। श्री राम सीता के पास संदेश भेजना चाहते थे। उन्होंने अपनी अंगूठी दी। हनुमान ने उस कार्य को इतने वेग पूर्वक किया कि स्वयं श्री राम भी शायद न कर पाते। फिर संजीवनी की आवश्यकता पड़ी। एक पहाड़ से संजीवनी लाने के लिए हनुमान को भेजा गया। संजीवनी की पहचान करने में समय बर्बाद न करके वो पूरा पर्वत ही उठा लाए! परन्तु सहजयोगी कहेंगे–श्रीमाताजी अगले वर्ष इसे देखेंगे। गणपति पुले में इसके बारे में सोचेंगे! वहाँ इस पर बातचीत करेंगे–आदि–आदि। उनके चरित्र के विषय में हमें यह बात समझनी है।

आज जब हम हनुमान जी की पूजा कर रहे हैं, हमें अपने अन्दर वह वेद–चातुर्य लाना चाहिए। यह अभी होना है, हम इसे टाल नहीं सकते। पहले ही बहुत देर हो चुकी है। जिन नन्हीं बालिकाओं को मैंने फ्रॉक, पहने देखा था वे अब विवाह योग्य युवतियाँ बन गई हैं। मैं सोचती हूँ, सारी उम्र मैं सहजयोगियों के विवाह ही करती रहूँगी। लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आपको वेगवान होना होगा। लटकाते नहीं रहना होगा और न ही इधर–उधर की बातों से संतुष्ट होना होगा। देखना होगा की लक्ष्य के लिए हम क्या कर रहे हैं। अच्छा है कि बच्चे बड़े हो गए हैं, उन्होंने बहुत अच्छा

नाटक खेला था। यह सब बहुत अच्छा था, मैंने इसका बहुत आनन्द उठाया। परन्तु करने योग्य कार्य तो बाकी है। अतः चित्त मुख्य कार्य पर होना चाहिए। यही हमें करना है। मुझे प्रसन्नता हुई कि अमरीका से वीडियो फिल्म बनाने का सुझाव आया है, परन्तु बाधाएँ भी हैं कि धन कहाँ से आएगा? क्या होगा? आप कार्य आरम्भ कर दें, धन मिल जाएगा। आपमें शक्तियाँ हैं। हर चीज़ का उचित प्रबंध हो जाएगा, आप शुरु तो करें। परन्तु मनुष्यों की तरह से यदि पहले आप सोचेंगे, योजना बनाएंगे फिर उन्हें खारिज करेंगे तो कुछ भी कार्यान्वित न होगा।

हनुमानजी यद्यपि हर समय पिंगला नाड़ी पर दौड़ते रहते हैं, वे हमारी सारी योजनाओं को धराशायी कर देते हैं क्योंकि उनके स्थान पर हम पिंगला पर दौड़ने लगते हैं। वो कहते हैं, 'ठीक है, तुम इस पर दौड़ रहे हो मैं तुम्हें ठीक कर दूँगा। वे सदैव आपकी योजनाओं को बिगाड़ देते हैं। इस प्रकार हमारी सभी योजनाएं असफल हो जाती हैं। हम समय के बारे में, महत्वहीन चीज़ों के बारे में चिन्तित होते हैं परन्तु सहजयोग में हमारी उत्क्रान्ति के समय की हमें कोई चिन्ता नहीं। हमारे लक्ष्य होने चाहिएं, नियत समय होना चाहिए कि इस समय तक हमें यह कार्य कर लेना है। जितनी तेजी से कार्य करेंगे उतना अच्छा होगा। बाकी सब चीज़ों का प्रबन्ध हो सकता है परन्तु यह आपका कार्य है, कोई अन्य इसे न करेगा। कोई अन्य इस कार्य (उत्थान) को न करेगा, यह आप ही को करना है। कहने से अभिप्राय ये है कि न आपको रेल चलानी है न वायुयान, न आपको प्रशासन चलाने हैं न राजनीति करनी है, आपको तो बस सहजयोग करना है, सहजयोग फैलाना है–इसे उस स्तर पर लाना है जहाँ लोग इसे देख सकें। अठारह वर्ष बीत चुके हैं, अब उन्नीसवाँ वर्ष है। आज हनुमान पूजा का पहला दिवस है। मैं कहूँगी, कि आपको साहस करना होगा–सामूहिक रूप में और व्यक्तिगत रूप में। भूल जाना होगा कि परिणाम क्या होगा। कहने का अभिप्राय है कि आप जेल नहीं जाएंगे, विश्वस्त रहें कि आपको क्रूसारोपित नहीं किया जाएगा। आपकी नौकरी यदि चली गई तो दूसरी नौकरी आपको मिल जाएगी और न भी मिली तो कुछ अन्य साधन मिल जाएगा। अतः आपको इन सब व्यर्थ की चीज़ों की चिन्ता नहीं करनी जिनके विषय में मानव करते हैं। परन्तु इस के बावजूद भी उन्हें काम मिलता है, वे नौकरियाँ करते हैं और किस प्रकार इनसे बंधे हुए हैं! मैं हैरान हूँ! मैंने अपने परिवार में देखा है कि किस प्रकार लोग अपने कार्य से बंधे हुए हैं! वे प्रातःकाल उठेंगे, ये करेंगे, वो करेंगे। परंतु आप इस बात से अनभिज्ञ हैं कि आप देवदूत हैं और ये आपका कार्य है। अतः आपको यही कार्य करना है, इसके अतिरिक्त कुछ आवश्यक नहीं।

मुझे आशा है कि आज की पूजा से वह

उत्साह, वह साहसी स्वभाव आपकी पिंगला को चैतन्यित करेगा और बिना किसी अहँभाव के, अत्यन्त विनम्रता पूर्वक, श्री हनुमान की तरह, आप इस कार्य को करेंगे। कल्पना करें कि सीताजी ने हनुमान को सोने के बड़े–बड़े मनकों का हार पहनने के लिए दिया। उन्होंने एक–एक करके सभी मनके खोल कर देखे कहने लगे कि इनमें श्री राम तो हैं ही नहीं, मैं इनका क्या करूं? सीता ने पूछा, श्री राम कहाँ हैं? हनुमान ने अपना हृदय चीर कर दिखाया कि 'हनुमान यहाँ हैं।' श्री राम यदि आपके हृदय में हैं तो आपको अहं हो ही नहीं सकता। कितनी गतिशीलता और कितनी विनम्रता का सम्मिश्रण था उनमें! आप ने भी यही प्राप्त करना है और इसकी अभिव्यक्ति भी करनी है।

जितना अधिक आप कार्य करेंगे उतना ही आप उन्नत होंगे। आप पायेंगे कि केवल विनम्रता ही कार्य करने में आपकी सहायक है और आप विनम्र, और विनम्र होते चले जाएंगे। परन्तु **यदि आप सोचते हैं कि ओह! मैं यह कार्य कर रहा हूँ तो बस समाप्त। परन्तु यदि आप मानते हैं कि परमात्मा-परम चैतन्य सभी कार्यों को कर रहे हैं, मैं तो मात्र माध्यम हूँ, तो आप में विनम्रता बनी रहेगी और आप एक प्रभावशाली माध्यम भी बने रहेंगे।**

मेरे विचार से यहाँ यह पूजा आवश्यक थी, यह अत्यन्त उचित अवसर पर हुई। यह सब देवदूतों का आयोजन है कि हमने यहाँ पूजा की। यह आप सबके लिए हितकर है। आपको वास्तव में जाकर संवाददाताओं से, मंत्रियों से, वेल्ज़ के राजकुमार से, सभी से मिलना होगा। समितियाँ बनाएं, सबसे मिलें और देखें कि आप क्या कर सकते हैं। बुद्धि से सोचें कि हमें क्या करना है। परन्तु आप लोग तो सोचते हैं कि मेरी माँ बीमार है, मेरा बच्चा बीमार है, मेरा वो बीमार है! **आप यदि परमात्मा का कार्य करें तो आपकी सभी चिन्ताएं वो ले लेंगे। आपको चिन्ता करनी ही नहीं पड़ेगी। वो सभी चिन्ताएं सम्भाल लेंगे।** यह केवल स्वयं को बढ़ावा देना नहीं है, यह सामूहिकता को बढ़ावा देना है।

आशा है आज आपने अपने अस्तित्व के सूक्ष्म पक्ष को समझा है जो पक्ष विद्यमान है, प्रदर्शित है और जिसे मैं स्पष्ट देख सकती हूँ। आप सब अपनी ध्यान–धारणा में इसके प्रति चेतन हो जायेंगे कि आपके अन्दर क्या निहित है। यही महानतम चीज़ है जो परमात्मा को प्रसन्न करेगी तथा परमात्मा आपकी देख–रेख करेंगे। हनुमान रूप देवदूतों के आत्मविश्वास से आपको आगे बढ़कर इसे कार्यान्वित करना है।

परमात्मा आप सबको धन्य करें।

यहाँ मुझे अहँ के विषय में बताना है। पश्चिम में अहँ वास्तव में बहुत बड़ी समस्या है। न जाने पश्चिमी लोगों में भारतीयों की अपेक्षा इतना अधिक अहँ क्यों होता है?

जैसा मैंने बताया, यहाँ आक्रामकता बहुत अधिक है यह गति–वर्धक की तरह है। परन्तु बायाँ पक्ष (Left Side) गति नियन्त्रक (Speed breaker) की तरह से है। मूलाधार यदि नियंत्रण में नहीं है, ब्रेक यदि ठीक नहीं है तो गति पर स्वाभाविक रूप से नियंत्रण नहीं किया जा सकता। अतः मूलतः मूलाधार का नियंत्रण करना तथा इसे ठीक करना आवश्यक है। इसे ठीक करने के लिए आपको परिश्रम करना चाहिए। ब्रेक यदि ठीक हो जाएंगे तो सहजयोग का कोई भी कार्य जब आप करेंगे, आप अहँ में नहीं फसेंगे। अहँ अब आप पर सवार न हो पाएगा। अतः पश्चिम में यह विशेष रूप से आवश्यक है। वहाँ मंगलमयता और पवित्रता के विचार को भयानक रूप से नष्ट कर दिया गया है। अतः यह देवदूत की शक्ति जो हमारे अन्दर स्थापित होनी आवश्यक है। इसी शक्ति के माध्यम से हम कार्य करेंगे। यही हमें सद्–सद्–विवेक प्रदान करती है, जो कि विनम्रता का स्रोत है।

मुझे आशा है कि आज ये दोनों गुण हम में इस प्रकार कार्यान्वित होंगे कि हम वास्तव में पूर्णतः आत्मविश्वस्त साक्षात्कारी आत्माएं बन जाएंगे, जिन्हें मैं आधुनिक युग के देवदूत कहती हूँ।

परमात्मा आपको धन्य करे।